

जनवरी १९५८

वेदेही

प्रकाशनक दशम वर्ष



वार्षिक
तीन टाका मात्र

Vaidehi
25 N. P.

एक प्रति
२५ नबका पैसा

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० भीसुरेन्द्रभा
'सुमन'भीसुधांशु 'शेखर'
चौधरीप्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि०

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

कथा-यात्रा

नेपाल-यात्रा

बन्नावला घर

तियम

डा० श्रीजयकान्तमिश्र ५१

मराठी कथाक अनुवाद १६

श्रीश्यामचन्द्रका ३८

आलोचना-खेल

नाटकक प्रगति

रेडियो नाटक

जयमंगलगाढ़

प्रो० श्रीअमरनाथका ३०

श्री 'इन्दु' ३५

श्रीप्रफुल्लकुमारसिंह २२

कविता

कोकिलाष्टक

भादव

अमर

श्रीलक्ष्मीपतिसिंह २७

श्रीभवनाथका ४

श्रीरामसेवकठाकुर २८

मुख-चित्र : पटना विश्वविद्यालय मध्य एम. ए. (मैथिली) क परीक्षा (१९५७) मे
प्रथक श्रेणीमे उत्तीर्ण-श्रीपरमेश्वरमिश्र ।

आवश्यक सूचना

(१) १९५७ क आलोचना विशेषांक वैह महानुभावकेँ पठौल गेल छन्हि
जनिक १९५७क चन्दा साधारणरूपमे वा सम्मेलनक पंचटकही सदस्यक रूपमे
प्राप्ति अछि ।

(२) जाहि ग्राहक महोदयकेँ जाहि मासक अंक नहि प्राप्त होइन्ह से ओही
मासक २० तारीख धरि अपन दिलेभरी पोस्ट-आफिससँ प्रमाणित आवेदन
पत्रकेँ कार्यालयमे समुचित कार्यवाहीक हेतु पठा देथि ।

—मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा।

[अष्टांगिनी १११ अष्टांगिनी १११ अष्टांगिनी १११ अष्टांगिनी १११]

भीमवनाथभा

भादव राति हाथ नहि सूफए, घोर निपट अनहरिया

विजलोका लए तकइत जनु हो अति आरत घन भेल-

कनइछ, निज घरनी मनमोहक-सुरूज ज्ञान कत भेल,

तें चिचियाए-गरजि नहि सुनए, काटए कलपि अहरिया

की घरनीक भरल लखि कोरा, पहिरल हरियर सारी,

चम चम चमकए भरल खेत में-जल जनु तकर किनारी,

तें नमि गेल धरए झट पाँखुर, घन अछि भेल पहरिया

सकले पंच आरि पर बैसल पीयर ढाबुस बेङ,

गीत कुकवि सन गाबि रहल अछि जनु जोतै अछि गेङ

सघन गाछ के पात चढ़ल जनु हवा बनल अछि भरिया

कामिनि शिर धए सूप चलै अछि धरती गोबर छत्ता,

भिजव न मनमे ठानि दुलै अछि जल भए जाए निपत्ता,

चुट्टी धरी बान्हि ऊँच पर, जाए मेघ लखि करिया

मदसँ भरलि मयूरी नाचए, नीलकंठ कल केँक,

नीप, केतकी अपन लुटाबए चउदिश परिमल फेँक,

बाध बोन सँ गाय लबैखन छौंड़ा खोंसए धरिया

चकबी बुझए राति दिन भेनहुँ झौंटए साथ कपार

झँखइछ पहु परदेशी सजनी केहन भाग हमार,

मानक किला मानिनिक तोड़ए, मानु मदन बड़बरिया

[३० अगस्त, १९५७ कएँ प्रसारित पटना आकाशवाणीसँ प्रसारित-साभार]

हमर दोसर नेपाल-यात्रा—(१)

हम एक मैथिली साहित्यक इतिहास लिखल । किन्तु होइत छल जे काज एखन बहुत बाँकी रहि गेल, रूपरेखी बहुत रास खण्डित अछि । तेँ जतए सम्भव भए सकल एकरा जोर देमय लगबहुँ जे नेपाल जाइत जाउ । बहुत काज करबाक सामग्री अस्त-व्यस्त, ओभराएल, अज्ञात ओतए पड़ल मैथिली-भाषीक बाट तकैत अछि ।

हमर प्रथम नेपाल यात्रा

मैथिली-साहित्यकेँ हम जहिआसँ अपन विशेष अनुसन्धान ओ अध्ययनक विषय बनाओल तहिआसँ हमरा ई सतत अभिलाषा होइत रहल जे कतहु मैथिलीक पुस्तकालय भेटैत जतए जमि कए अध्ययन कए सकितहुँ । मुदा दुर्भाग्यवश तेहन कोनो स्थान नहि भेटल जतए खूब अधिक सामग्री हो, जतए वर्ष-दू वर्ष वा ताहूसँ बेसी, दिन—प्रतिदिन मैथिली-साहित्यक अध्ययन करबाक सम्भावना हो । हमरा अपना घरमे बेस सामग्री छल; गंगा बाबूक (महामहोपाध्याय डा०।सर गंगानाथभाक) ओहिठाम सेहो बहुतरास सामग्री छल; मुंशी रघुनन्दनदासक ओतए सेहो बेस विस्तृत सामग्री भेटल; आर ठाम-ठूम बहुतो ठाम ग्रन्थ सभ भेटल । मुदा ताहिसभसँ सन्तोष नहि भेल । हम तँ तकैत छलहुँ समुद्रकेँ—कूप, तड़ाग, सरोवरसँ कोना सन्तोष होइत ? संयोगसँ श्रीसुनीतिबाबूसँ (डा. श्रीसुनीतिकुमारचाटुर्ज्या, कलकत्ताक भाषा-विज्ञान महान विद्वानसँ) भेट भेल । ओ कहलन्हि जे नेपाल जाउ । ओतए बहुत सामग्री भेट । परञ्च हुनका एकर पूर्ण ज्ञान नहि छलन्हि अथवा ओ हमरा स्पष्ट नहि कहि सकलाह जे कोनो ततेक सामग्री छैक । किन्तु हुनका कथ्यसँ ई धरि निश्चय भेल जे नेपाल जेबाक चाही ओतए किछु ने किछु नवीन सामग्री भेटत ।

तावत प्रबोधचन्द्रबागचीक एकटा प्राचीन निबन्ध बंगीय-साहित्य-परिषद्-पत्रिकामध्य पड़ल आर राहुल सांकृत्यायनक तिब्बत - यात्राक विवरण सुनल ।

मोन आशा ओ उत्साहसँ भरि गेल । निश्चय कएल जे नेपाल अवश्य जाएव । नेपालक एकटा मित्र छथि प्रिंसिपल साहेब (श्रीरुद्रराज पाण्डेय, ताहिसमय त्रिचन्द्र कालेजक प्रिंसिपल रहथि) जे उत्साह देलन्हि जे अहाँ आउ हम सभटा सुभीता कए देब । नेपालक श्री शैमान् महाराजक सेहो स्वीकृति ओ सहयोग प्राप्त भेल आर २० सितम्बर १९४६ केँ हम नेपालक हेतु प्रस्थान कएल । बाटमे मुजफ्फरपुर होइत “भुवन” जीक कवित्वमय डेराक दर्शन करैत नेपालीय पर्वत सभक पर्यटन करैत २४ सितम्बरक संध्याकाल काठमांडू पहुँचलहुँ । नेपालमे हम राजगुरु हेमराजशर्माक पुस्तकालय मध्य अनुसन्धान करए लगलहुँ । दुइए दिनुक परिश्रमे प्रसिद्ध ‘कंसनारायण-पदावली’ भेटल जकर आइधरि ककरो अस्तित्वो नहि बुझल छलन्हि । आनो ग्रन्थसभ भेटल । किन्तु सहसा हम दुःखित पड़ि गेलहुँ । आन-आन पुस्तकालय नहि जा भेल । हेमराजहुक पुस्तकालय बहुत रासे बाँकीए रहल । प्रिंसिपल ओ महाराजक अनुकम्पासँ हमरा राजकीय वीर पुस्तकालयक पुस्तक-सूची भेटल तथा दुःखितेमे तकरा आधारपर पं० श्रीगुणनिधान द्वारा ओकर आदि-अन्त देखि भाषाक निर्णय कए किछु सामग्री एकत्रित कएल । एहि सभसँ हमरा ई धरि ज्ञान भए गेल जे एहिठाम सामग्री बहुत छैक आर से कोनो पैघ तातील मे वैसि अन्वेषण कएने सम्भव अछि थाह लागए कतेक छैक ओ केहन छैक । पिआस कम नहि भेल थोड़ेक पानि भेटने ओ आर जागृत भए गेल !! थोड़ेवे दिन रहि हम प्रयाग घुरि अएलहुँ । नेपाल गेलहुँ मुदा कपार सङे लागल गेल !!

दोसर यात्राक प्रयोजन

कोनहुना संकलित सामग्रीक आधारपर हम एक मैथिली साहित्यक इतिहास लिखल । किन्तु होइत छल जे काज एखन बहुत बाँकी रहि गेल, रूपरेखो बहुत रास खण्डिते अछि । तेँ जतए सम्भव भए सकल एकरा जोर देमय लगलहुँ जे नेपाल जाइत जाउ । बहुत काज करबाक सामग्री अस्त-व्यस्त, ओझरा-एल, अज्ञात ओतए पड़ल मैथिली-भाषीक बाट तकैत अछि । पटना कालेजक मैथिली - प्रोफेसर श्रीजयदेवबाबूसँ गप्प भेल तँ इएह निवेदन कएल; रामकृष्ण कालेज मधुबनीक प्रोफेसर श्रीजयधारीसिंहसँ मैथिली साहित्य विषयक अनुसन्धानक चर्चा भेल तँ इएह निवेदन; बाबू श्रीलक्ष्मीपतिसिंहसँ

मैथिली साहित्य गोष्ठीक अनुसन्धान करबाक प्रोग्राम बनबाओल तँ इण्ड निवे-
दन । किन्तु सुतल हो तकरा ने जगाओल जाए । जे जगलेमे सुतल अछि तकरा
के जगाओल । मैथिली-भाषी जनता सुतल नहि अछि ओ जागल भए आलस्यमे
पड़ल अछि । हमरा बड़ए खेदसँ कहए पड़ेछ जे १०-१२ वर्षक मध्य मैथिली-
साहित्यक अनुसन्धान कार्यमे बड़ शिथिलता अछि । दुइ गोटे जँ मैथिलीमे
अनुसन्धान भारम्भो कएलन्हि अछि से “ग्राम्यगीत” वा ताही प्रकारक
साहित्यपर; पटना विश्वविद्यालयक मिथिलेश मैथिली फंडक उपयोग भए रहल
अछि तँ छपलहे पुस्तक सभक प्रकाशनमे (‘पुरुष-परीक्षा’क, ‘कीर्तिलता’क
तथा ‘राग-तरंगिणी’क पुनः प्रकाशन व्यर्थ नहि थिक किन्तु जे असंख्य अमुद्रित
ग्रन्थ छैक तकर अपेक्षा ई सभ एखन बेसी आवश्यक नहि बुझना जाइछ);
तथा रिसर्चक नाम पर राष्ट्रभाषा-परिषद् “मैथिली बोली”क शब्द-संग्रह
हिन्दोक शब्दकोष भरए लेल मैथिले विद्वानसँ करवाए रहल अछि अथवा
विद्यापतिक छपलहे ग्रन्थसभक प्रामाणिक संग्रह प्रस्तुत करबामे लागल अछि !
एम्हर हम मैथिली-साहित्यक अन्वेषणसँ स्वयं विरत भए अङ्गरेजी-साहित्यक
अध्ययनमे प्रवृत्त भए गेलहुँ । निन्न दूटल तँ देखैत छी जे अनुचित भए रहल
अछि चारू कात अन्धकारे अछि आर पिआस तेज भए गेल ! मैथिली पुस्तकक
एकठाम अध्ययन करबाक स्थान पर जेबाक उत्कण्ठा पुनः जागृत भए गेल; ई
अवसर छल परुकाँ अगहनमे ‘वैदेही समिति’क अ०भा० लेखक सम्मेलनपर ।

दोसर यात्राक तैयारी

माघमे संयोगवश पुनः प्रिंसिपल साहेब भेटलाह । कहलन्हि जे नेपाल फेर
आउ । ओहि बेर किछु देखबो नहि कएल । हम निश्चय कएल जे एही गर्मीक
तातीलमे जाएब । पत्राचार कएल । श्रीमुक्तिनाथम्मा ओकील भीमसेन-
स्थान मैथिलक विशेष स्नेही मित्र छथि । प्रथम यात्रामे ओ हमर अत्यन्त
सहायक छलाह । अपना बासामे स्थान देब स्वीकार कएलन्हि ।

मइ मासक दोसर सप्ताहमे हम रक्सौल विदा भेलहुँ । अमलेखगंजमे अथवा
भैरवी मध्य त्रिभुवनपथ द क बस भेटबाक सम्भावना छल । किन्तु से सम्भव
नहि भेल ।

हम निर्णय कएल जे आब आगू नहि जाहोएत । फीरि जाइ ताबत देवढीहाक
दुइ तीन मैथिली-भाषी सज्जन भेटलाह । हमरा सभक निर्णय देखि ओ कहए

लगलाह—‘अपने कियेक घुरव । चलल जाओहम सभ चारि गोटे ओ, अपने सभकेँ सकुशल पाएरेक बाटे पहुँचा देब ।’ हम कहलिअन्हि जे हमरा ओ बाट देखल अछि । हम तँ बससँ जायब पाएरे नहि जा होयत । बस बन्द छैक तखन फीरि जाएब । किन्तु ओ सभ नहि मानलन्हि । अगत्या हमरो तँ इच्छा छले जे कहूना नेपाल जाइ, विदा भए गेलहुँ ।

भीमफेडी धरि मोटर अबैत छैक—सभटा पुरना चिन्हारे बाट छल । दस वर्षक स्मृतिसभ जागृत भए उठल—अपूर्ण कार्यकेँ पूर्ण करबाक उत्कण्ठा, तीव्र होइत पिपासाकेँ तृप्त करबाक तृष्णा आर बहुत रासे किदन-किदन वैयक्तिक पारिवारिक भावना उठए लागल ।

नेना सभ (चि. श्रीबिल्लू ❀ पहिले बेर गेल रहए आर सभ प्रथमे पहाड़पर चढ़ैत रहए) कहलक चलबे करू । अन्ततोगत्वा पाएरे विदा भेलहुँ ।

एहिबेर जे तामदान ओ बाको सभ कएल से ओहि बेरुकसँ विशेष धृत ओ भंझटिया छल । हम सभ पाँच गोटे एकटा बाट धरी तँ पाँच गोटे दोसर बाट धए लिअए—आ दुहु बाटकेँ दू कोस धरि सम्पर्क नहि होइक । एहिसँ हमसभ बड़ चिन्तित भए गेल छलहुँ किन्तु कतबो किछु कहिएक ओ सभ सुनबे नहि करए । जँ ई चारि-पाँच गोटे मैथिली - भार्गो मित्र नहि रहतथि तँ हमरा सभकेँ बहुत कष्ट होइत ।

पहिल कैम्प गढ़ीमे खसल । राति सभ गोटे एकटा दोकानमे बिताओल ओतए जेहन घी खाओल तेहन स्वादिष्ट घी आइ धरि कतहु भेटल नहि अछि । किन्तु दही बड़ अम्मत छलैक ।

भोरे वस्तु - जातक जाँच भेल आर तखन जे मनोरम यात्रा आरम्भ कएल से वास्तवमे समस्त यात्राक सुन्दरतम स्मृति अछि । टेढ़-मेढ़, ओससँ भीजल, ठाम-ठूम सूर्यक प्रकाश वा लालिमासँ रंगल सबजी, छोट-छोट गाछ-वृक्ष, तीन-चारि हाथ चाकर बाट तेहन रमणीक लगैक जे की कहू । कबि होइतहुँ तखने ओकर वर्णन कए सकितहुँ ।

घुमैत - फिरैत ११ बजे कुलीखानी पहुँचलहुँ । ओतए एकटा मन्दिर ओ विशाल धर्मशाला छैक । ओतए विश्राम करैत गेलहुँ । एतए दूध - चूड़ा

❀ डाक्टर साहेबक ज्येष्ठ बालक

बढ़िया भेटैत छैक । भोजनोत्तर पुनः बाट धएल । एहिठामक बाट सेहो बड़ रमणीक छैक । सुदा एकरा उपरान्त बहुत दूर खेत सभ छैक, बस्ती छैक, पहाड़ी जीवनक नमूना देख पड़ैत छैक । आब धीरे-धीरे थाकए लागलहुँ । हमर मित्र लोकनि एकटा हमरा ठेंगा बना देलन्हि । एक ठाम केवल पाथर ततेक खसल रहैक जे ओकरे नदी देखि पड़ल । गत दिन सांझ खन जखन भीमफेड़ीए रहो से बेस वर्षा भेल रहैक तेँ गर्मीओमे पहाड़ पर चलब ओ भोरमे एतेक रमणीय दृश्य लागल ।

पड़ाइपर कहैत छैक “शीशा गढ़ीक चढ़ाइ आ चन्द्रा गढ़ीक दुलाइ” नामी छैक । हमरा तँ एकदन्ता पहाड़सँ टपला उत्तर जे चढ़ए पड़ल से आजन्म नहि बिसरत । ओ छलैक चन्द्रा गढ़ीक चढ़ाइ । प्रायः एहि विपर्ययक कारण ई छल जे हम नवोन सुगम मार्ग दए शीशागढ़ी चढ़लहुँ आर चन्द्रा गढ़ी उतरलहुँ । किन्तु चन्द्रा गढ़ीक चढ़ाइ हमरा नाङ्क कए देलक !

सांझ होइत - होइत थानकोट पहुँचि गेलहुँ । उतरए काल ततेक थाकि गेलहुँ जे पाएरे पहाड़ नांघबाक निर्णयपर दुःख होमय लागल - स्वगत-भाषण करैत छलहुँ; होइत छल किएक फेर एहि पहाड़ी बाटक भंभट मे पड़लहुँ, हवाई जहाजक डरेँ बसक बाट तकलहुँ तँ पुनः पाएरेक भयानक कष्टमे पड़लहुँ । हवाई जहाजक यात्रासँ मोन अकच्छ भए गेल । निर्णय कएल जे जाइत काल नेना - भुटका सभकेँ दृश्य देखबाक लोभ छलैक से तँ पुरलैक आब घुरती हवाई जहाजसँ जायब । सभ प्रकारक विचार-धारामे बल छल केवल मातृभाषाक अध्ययन ओ अनसुन्याव ब्रत ! कखनहुँ अपनाकेँ धिक्कारबो करी जे बाबा पशुपतिनाथ ओ गुह्येश्वरी माइ किएक ने मोन पड़ैत छथि हुनके नाम लए सभ कष्ट काटि जाइ, पुण्य होयत । बुद्धि मानए किन्तु हृदयमे तँ मैथिलीक माँ जगदम्बेक मात्र ध्यान अबैत छल । पापी, स्वार्थी, संकुचित मानव !!

काठमाण्डूक डेरा

थानकोटमे ततेक जोर बिहाड़ि ओ वर्षा आएल जे बूझि पड़ए जे ओहि राति ओतहि दोकानपर रहए पड़त । किन्तु शीघ्रे टैक्सी भए गेल । ओ नेने १०

बजे राति काठमाण्डू त्रिपुरेश्वरपर 'रेस्ट हाउस' छैक (बूमू एक प्रकारक सरकारी सुन्दर धर्मशाला जाहिमे मैथिल विशेष संख्यामे बारहो मास रहैत छथि) आनि देलक । उपमन्त्री श्रीनागेश्वरजीक भाए श्रीभिखन (श्रीबिक्कन ?)

बाबूक साहाय्येँ हम सभ राति ओतहि डेरा पाओल ।

भोरे दूटा विद्यार्थी हमरासभकेँ ओकील श्रीमुक्तिबाबूक डेरा पर ल गेलाह । ओ बड़े हर्ष पूर्वक स्वागत करैत अपन नबका 'मकानमे' डेरा देलन्हि । विष्णुमती नदीक कातमे, कंकेश्वर महादेव लग एक स्कूलक निकट फैल स्थानमे श्रीमुक्तिबाबूक वासा छन्हि । हमरा सभकेँ रहबाक बड़ सुन्दर ओ सुभीताक डेरा भेटल ।

दू-एक दिन विश्राम कएल, वन - उपमन्त्री श्रीनागेश्वरजी, शिक्षामन्त्री, प्रभृति गण्यमान्य व्यक्तिसँ भेट कए पुस्तकालय सभक समय ओ व्यवस्था बुझलहुँ । हेमराजजी मरि गेलाह आर हुनक विशाल ओ महत्वपूर्ण पुस्तकालय सरकार कीनि लेने छैक । तकरो पुनःदेखबाक इच्छा छल—'कंसनारायण-पदावली'क प्रतिलिपि करबाक इच्छा छल । किन्तु नाना प्रकारक परिश्रम कएलो पर हुनका पुस्तकालयमेसँ मैथिलीक ग्रन्थ एहि बेर देखल नहि भेल ।

वर्तमान नेपाल सरकार

वर्तमान नेपाल सरकार पहिनेसँ बहुत उदार ओ लोकप्रिय/अछि तथा जनताक प्रवेश सभ विभागमे भए गेल छैक । किन्तु कार्यक प्रणाली एखनि धरि प्राचीन ओ अपटु छैक । तस्मात् जे कार्य पहिने दू दिनमे (प्रवेश भेलैँ !) सम्भव छलैक से आव सहज प्रवेश भैनहुँ दुर्लभ अथवा बहुसमयसाध्य भए जाइत छैक । उदाहरणार्थ हमरे बिनती पत्रक कथा सुनू । हम मास दिनसँ उपर सर्वत्र दौड़लहुँ, दौड़ैत-दौड़ैत तरबा खिआ गेल तखन अनुमति भेल जे हेमराजक पुस्तक सूची देखि सकैत छी किन्तु जखन हम ओकरा देखि १० टा मैथिली पुस्तकक नाम नोट करए लगलहुँ तँ ओहि हेतु पुनः आज्ञा लेबाक समय माझल गेल आर सेहो आज्ञा नहिये भेटल । एकटा आर प्रार्थनापत्र हम ज्योतिरीश्वरक मैथिली नाटकक फोटोक हेतु देलियेक से एखनि धरि आज्ञाक अपेक्षा कए रहल अछि ! कहल गेल जे आज्ञा भेटलापर दस टाका प्रति पातक हिसाबेँ दक्षिणा लागत !! जखन श्री ३ मानक सरकार

छलैन्ह तँ हम विद्यापतिकृत 'गोरक्षोपाख्यान'क फोटो मङ्गवाओल—विना खर्च डाकसँ समस्त ग्रन्थ एक सप्ताहमे भेटि गेल छल !

रोक-टोक, नियम-भङ्ग, विना प्रयोजनक प्रतिबन्धसभक एखनहुँ ढेरी छैक । सिंह-दरबार मे (मंत्रीसभक कार्यालय) प्रवेश २ बजे धरि निषेध छैक तकरा पश्चात् गेने मंत्री ओ सरकारो कार्यकर्ताक भेटब निश्चित नहि तस्मात् कतिपय दिन व्यर्थ जाउ-आउ तकर संयोग रहैत छैक ।

जनताक कथ्य छैक जे गरीब जनताक कोनो पुछारी नहि नेतालोकनि अपना-अपना स्कीम ओ पदक मोहसँ मातल छथि । सरकारकेँ जन-सम्पर्कक सर्वथा अभाव छैक । एहना परिस्थितिमे ओकरासभक दुःख - सुख अनुभव करब कठिन छैक । हमरा विचारेँ जँ जनतामे शिक्षाक अधिकाधिक प्रचार होइक आओर शीघ्रगामी यातायातक साधन सस्त ओ प्रचुर मात्रामे उपलब्ध भए सकतैक तखनहि जनता ओ सरकारक सम्बन्ध घनिष्ठ होएतैक आर सरकार उचित रीतिसँ जनताक उपकार कए सकत, ओकर उन्नति करवाक योजना बूझि ओ बना सकत । दुःखक विषय थिक जे जतय नेपालक जनता एतेक अज्ञ ओ पछुआएल अछि ततए ओ व्यर्थक पाखण्ड ओ आडम्बरमे, फैशनमे, बाहरी चटक-मटकमे डुबल रहैछ फलतः ओकर समस्यासभ आधुनिकतम रीतिँ वैज्ञानिक ओ सुसंस्कृत समाधानकेँ नहि प्राप्त कए सकैछ । एकर उपाय केवल शिक्षा—अधिक शिक्षा मात्र छैक—प्राथमिक, माध्यमिक ओ उच्च शिक्षा सभ प्रकारक शिक्षाक विशेषकेँ 'टेक्निकल' शिक्षा बड़ शीघ्र ओ एकटा क्रमबद्ध ढङ्सँ होएब अविलम्ब जरूरी छैक ।

शिक्षाक गण्य करैत मोन पड़ैत अछि जे संस्कृत शिक्षाक ओतय सम्मान छैक । किन्तु तकर अर्थ ई नहि थिक जे ताहिमे सुधार होएब आवश्यक नहि छैक । पुस्तकालय सभ संस्कृते विभागमे छैक आर आश्चर्य होएत जे ओ ततेक विचारवान लोकक हाथमे छैक जे लाखसँ अधिक संख्याक पोथीसभक सूची बहार कए लेल १००) टाका प्रायः बजेट कएने छैक ! परञ्च ई तँ ओकर गरीबीक कारणेँ सेहो भए सकैछ ।

सभसँ बाढ़ि ओहिठाम मातृभाषाक महत्व देखल । चिट्ठी - पत्री, दरखास्त, बिनती, फाइल, सर-कचहरी, शिक्षा, कार्यालय समस्त विभागमे नेपालीभाषा, नेपाली कागज ओ नेपाली वस्त्रक बड़ मान छैक ।

जँ कोनो वस्तुक अभाव छैक तँ ओ छैक तराइक मातृभाषाक (मैथिलीक) समुचित स्थान । तराइक जीवन ओ संस्कृति पहाड़ी जीवनसँ सतेक विभिन्न छैक जे ओकरा एकटा प्रान्तक रूप देब आवश्यक छैक । ओकरा अपन हाइकोर्ट, शिक्षा, पुलिस सभ वस्तु एकटा स्वतन्त्ररूपक बाहिएक । तखनहि ओकरा जनताक कष्ट एवं दुःख सुविधा ओ शीघ्रतासँ दूर भए सकतैक । हमरा ज्ञानेँ जनकपुरमे एकटा मैथिली माध्यमक विश्वविद्यालय आर एकटा राजकीय प्रान्तीय हाइकोर्ट एवं मन्त्रणालय कए देने सबसँ सुलभ रीतिए कार्य सम्पन्न भए सकैछ ।

एहि सम्बन्धमे हमरा तराइ कांग्रेसक एक-दू गोटेसँ वार्तालाप भेल—ताहूसँ महत्वपूर्ण जनकपुरधामक श्रीश्रीकृष्णमिश्र (मुरलीसर-निवासी पंडितजी)सँ विशेष वार्तालाप भेल । हुनक बहुतरास कार्यक विवरण पढ़ल ओ हुनक अद्भुत कर्मठ कार्यप्रणाली देखि मुग्ध भए गेलहुँ । हुनक कार्य विस्तृत नहि भए रहल छन्हि तथापि यदि हुनका सन दसटा सुपुत्र मिथिला बहार कए सकथि तँ हुनकर उद्धार अवश्य सम्भव छन्हि । हमरा तँ तेहन अनुसन्धान रोग घेने छल जे एहि भविष्य कार्यकर्ताक विशेष सहायक नहि भए सकलहुँ । किन्तु हुनक कतिपय विचारसँ सहमत छी । धर्म ओ स्थानक महत्त्व राष्ट्रीय कार्यमे की छैक, संस्कृति ओ विद्याक सम्बन्ध देश, भाषा ओ जातिसँ की छैक से ओ खूब बुझैत छथि । किन्तु हुनका किछु आधुनिकताक अभाव छन्हि, विज्ञानक शक्तिकेँ एकदम अनठएबाक दुराग्रह छन्हि, अपन कार्यप्रणाली द्वारा बहुसंख्यक जनताकेँ सुसम्बद्ध संस्थामे बान्हि राखब कठिन छन्हि । किछु तँ बेचारे की करताह—हुनक जनता एकदम अपढ़, गमार छन्हि ओकरा तँ कांग्रेसी चर्खा प्रभृति सर्वोदय प्रोग्राम जकाँ कोनो योजना मात्र द्वारा संगठित कएल जा सकैछ । शिक्षा - संस्कृति—विद्या प्रभृति वस्तुक महत्त्व ओकरासभकेँ बुझब असम्भव छैक—ओ तँ केवल कोनो क्रियात्मक, बाह्य कार्यप्रणाली मात्रसँ बात बुझत धर्मक कार्यप्रणालीसँ तँ केवल भाषण सुनत, भाषण करत, धार्मिक स्थलमे एकत्रित होएत विचार-विनिमय करत । कहबाक अभिप्राय जे रचनात्मक कार्यक्रमक हुनका स्कीममे अभाव अछि जाहिसँ किछु धन उपार्जन करबाक मार्ग भेटैक । जा धरि

सेहो नहि रहत सभटा गप्प गप्पे भरि रहत, बौद्धिक ओ धार्मिक विकास मात्र पर्याप्त नहि थिक—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभक प्रयोजन छैक। चतुर्वर्ग, चारू पुरुषार्थक प्रयोजन छैक !

काठमाण्डूमे मैथिली-भाषीक एकटा सम्मेलन ई सभ विचार-विमर्श करवाक हेतु ओ आयोजित करैत छलाह। किन्तु खेद अछि जे हम सपरिवार पेटक दुःखसँ तेना क्लेशित भए गेलहुँ जे हुनकर आयोजन पूर्ण नहि भए सकलन्हि। हमरा नितान्त दुःख अछि जे हम ई विचारधारा आर नीक जकाँ तराइक नेता सभक समक्ष नहि राखि सकलहुँ। कलेबर वृद्धिक भयें हम एहि लेखमे ओ सभ संकेत मात्र कए सकलहुँ अछि।

बीर पुस्तकालय

तेसरा दिन हम बीर लाइब्रेरी गेलहुँ। पुस्तकालय मुख्यतः त्रिचन्द डिग्री कालेजक एकटा विशाल हौलमे स्थित छैक। ओकर द्वार नँघैत मोन पड़ए लागल सिल्वन लेवी, बेन्डेल, म० म० हरप्रसाद शास्त्री, डा० काशीप्रसाद जयसवाल, राजगुरु हेमराजशर्मा, डा० बागची, श्रीसुनीतिबाबू.....सभ दिग्गज विद्वानसभ जनिक प्रतापेँ आई मैथिलीक, भारतीय वाङ्मयक कतिपय अध्यायक पूर्ति सम्भव भए सकल छैक। ई सभ एही द्वारसँ एहि पुस्तकालयमे आएल छलाह।

किन्तु हौलक भीतर प्रवेश कएलापर ओतुका रङ-ढङ देखि हतोत्साह भए गेलहुँ। पैघ - पैघ खूब नाम आर चाकर ३०-४०टा आलमारी आर एकटा बड़ी डबल टेबुलक चारूकात २-४ गोटे पण्डित लोकनिक—बस इएह छल पुस्तकालयक कार्यप्रणाली, साज देखि बड़ दुःख भेल—हमर तँ स्वप्न छल जे आधुनिकतम रूपसँ सभटा इन्तिजाम होएतैक.....आ ई सभ तँ प्राचीनो केँ लज्जित कएने अछि।

क्रमिक श्रीबुद्धिसागरजी (हस्तलिखित विभागक अध्यक्ष, व्याकरणाचार्य) श्रीघनश्यामजी, आर श्रीगुणनिधानजीसँ परिचय भेल। एहिमे सबसँ बेसी परिचय प० श्रीगुणनिधानसँ भेल—इएह छलाह जे पहिल यात्रामे एहि पुस्तकालयक सामग्री देखाए देने रहथि। इएहटा ओतयकेर प्रत्येक

लिपिसँ परिचित छथि जाहिसँ एतए आबि विद्वान लोकनि प्राचीन पोथीसभ बाँचि पवैत छथि । सत्तरि वर्षक, गम्भीर, स्नेही, विद्या-प्रेमी एहि पंडितजीक हम हृदयसँ कृतज्ञ छी.....ई नहि होइतथि तँ सम्भव नहि छल जे हमर नेपाल-यात्रा ततेक सफल होइत जतेक भए सकल..... क्रमिक पुस्तकालयक बृहत् ग्रन्थ सूची देखए लगलहुँ । नेपाली भाषामे पं० विद्यानाथक बनाओल तीन जिल्दमे ई सूची अछि । एकर तैयारी राजगुरु हेमराज करबओने छलाह...वेस निविष्ट रूपसँ ई लिखल छैक । ग्रन्थनाम-लिपि-भाषा-समय-विशेष विवरण-पृष्ठसंख्या सभ ठेकानसँ लिखल छैक । हँ, मैथिली ग्रन्थक सूचना ठीकसँ नहि छैक—“भाषा” “नेवारभाषा”, प्रायः कतहु मैथिली भाषाक शब्द नहि छैक । मैथिली लिपि मात्र शुद्ध संकेत छैक । किन्तु अधिकांश मैथिली पोथी ओतए नेवारी लिपिमे छैक तकरा नेवारभाषा कहि लिखल छैक—ठाम-ठूम नेवारीलिपि थिक आ कि मैथिलीलिपि थिक सेहो विवाद निर्णय कएल छैक ।

तोत दिन बरोबरि एहि सूचीक अध्ययन कए संभावित मैथिली ग्रन्थक सूची तैयार कएल । आर से सूची प्रायः ५०० ग्रन्थक भेल ।

तकरा पश्चात् पोथी सभ बहार कराबए लगलहुँ । जेना अपना सभ देशमे हस्तलिखित पोथी रखैत छी तहिना ओ सभ राखल छैक । कोनो विशेषता नहि छैक । आब एकटा आलमारीमे किछु ग्रन्थ फुटा-फुटाकए राखल जाइत छैक । जेना-जेना हम ग्रन्थ देखए लगलहुँ तेना-तेना हमरा हर्षक सीमा नहि रहल-सभटा मैथिलीए पोथी बहराय लागल, कचित् कचित् अन्य भाषामे (विशेषकए नेवारीमे) छलैक । पाँच-छओ दिनक बाद मोन गद्-गद् होमय लागल । जीवनक स्वप्न, मैथिली पुस्तकालय पाबि जेबाक अभिलाषा पूर्ति भेल । कतेक सामग्री हम देखलहुँ आर कतेक एखनो ओझराएल “खतड़ा” नामक बंडल सभमे फेकल पड़ल छैक तकर सीमा नहि । दू-तीन वर्ष धरि मैथिली पोथी पढ़ैत रहब किन्तु पार नहि लागल । हम मास दिनसँ उपर नेपाल रहलहुँ । हमर नित्यक ११ बजेसँ ५ बजे (वा कखनहु ३ बजे मात्र) धरि पढ़ैत छलहुँ, केवल खोलि-खोलि उनटबैत छलहुँ किन्तु सभटा पोथी देखल नहि भए सकल ।

ई पुस्तकालय हमरा सभक साहित्यक अमूल्य भण्डार थिक । एकरे हमरा अन्वेषण छल हमरा ई कहैत संकोच नहि होइत अछि जे जा धरि एहि पुस्तकालयसँ हम सभ मैथिली ग्रन्थकेँ नहि अनैत छी आगाँ काज करव व्यर्थ थिक ।

सौभाग्यवश हमर प्रान्तक शिक्षामन्त्री मैथिलीक गम्भीर विद्वान् छथि । की हम आशा करू जे सरकारी स्तरपर कोनो तेहन स्कीम होएतक जे ई स्वप्न सत्यक रूप धरत ? लाइब्रेरीमे फोटो फिल्म लेबाक ने मशीन छैक आर ने अनुमति भेटैत छैक से सरकारी योजना द्वारा सम्भव छैक ।

एहिठाम हमरा नेपालक प्रमुख विद्वान सभसँ भेट भेल । अनुसन्धानक हेतु तँ नहि पुस्तकालय समितिक प्रति शुक्र दिन मीटिंग होइत छैक ताहीमे ।

हरिसिंह देव तिपाटनमे मुइलाह आर नेपालमे राज नहि कएलन्हि एहि सिद्धान्तक ओसभ बड़ प्रामाणिक ओ विवादपूर्ण निर्णय कएने छथि ।

एहि प्रसङ्ग 'इतिहास-संशोधन' नामक बेस सुन्दर धारावाही पेम्प्लेट सभ देखल । अद्भुत उत्साह ओ विद्या-प्रेम अछि एकर आयोजक सभमे— सत्यान्वेषण करव तथा अपनो भ्रमकेँ स्वीकार करव ई गुण देखल ।

चारि पाँचटा उत्साही नेपाली युवक एकर संचालन करैछ आर नेपालक निविष्ट विद्वान लोकनिक एकरा सहयोग प्राप्त छैक । एकर प्रकाशनगृह सेहो एक दिन गेलहुँ—पीयूष औषधालयक कार्यकर्ता लोकनि एकरा चलवैत छथि । एकर नियमित प्रकाशन नहि छैक मासमे दू टा वा एकटा १६ पेजसँ ३२ पेजक इतिहासक कोनो संशोधन भेलहि छपैत छैक । खर्च बेसी नहि पड़ैत छैक आर क्रमिक नेपालक इतिहास सामग्री बहुत रास संकलन-संशोधन भए गेल छैक । एकर प्राय ४६ टा अंक बाहर भेल छैक । हँ सभटा विषय नेपालीए माध्यम द्वारा प्रकाशित होइत छैक ।

एखनहु धरि बिस्फी आंगनमे, मिथिला बहवधि नोर
कविता मिलित कंठसँ गबइछ, 'हमर दुखक नहि ओर' ।

—'सुमन'

बच्चा कला घर

कान्तासँ हम कहलियेन्ह—दास नलि गेलाह । हाथ ! ई बात केहन भ गेल । हमरा ओ डॉटय लगलीह—अहाँ हुनकासँ किएक ने अनुरोध कएलियेन्ह जे आह धरि ओ थमि जइतथि । भिनसरेसँ हमरा ओत दासक लेख जे पढ़ुनह भेल वैह बहुत भ गेल । जीवनमे कथमपि बिसरियो क हमरा घर ओ पैर नहि रखताह—हम कहलियेन्ह ।

बेश नहि ओताह त नहि आवथु । एतबा त हुनका बुझबाक चाहि-
ऐन्ह ई बच्चावला (नेनावला) घर थिक—कान्ता गर्वसँ कहलन्हि ।

मामा अयलाह अछि; अतः ओही आनन्दमे बच्चा सभ अहल भिनसरे उठि बैसल । सभसँ पहिने कांता उठलीह । हम जगिते देखल—नेनाक मामा राघेयसँ मधुर गप्प-सप्प करइत छलाह—‘अहाँकें कैकटा हाथ अछि?’ ओ पुछलथिन्ह । ‘तीन’—राघेय उत्तर देलकएन्ह । ‘अहाँकें पैर कैकटा अछि?’ मामा प्रश्न केलथिन्ह । ‘पैलो तीन’—राघेयक तोतरायल बोली सुनैत-सुनैत हम उठलहुँ ।

बच्चाक मामा हमरासँ कहलन्हि—‘पाहुन, अहाँ सुनलएक ? राघेय कहइत अछि एकरा तीन हाथ आ तीन पैर छैक ।’ ‘गिनतोमे तीन छाड़िकय दोसर कोनो अंक ओ जनबे नहि करइत अछि ।’ जबाब दैत हम नीचाक सीढ़ी उतरऽ लेल छलहुँ, एतबेमे हमर पद्मा बड्ड जोरसँ कनइत जागि उठलि । ओकरा ल जाक हम ओकर माय के लग द देलियेक आ हाथ-मुँह धोक उपर जा बैसलहुँ । ‘मामा’ आ हुनका सक आएल हुनक मित्र ‘दास’ पहिनहिसँ हाथ मुँह धोयने बैसल छलाह । हम तीनू गोटे गप्प-सप्प करइते छलहुँ, एतबेमे एहन जोरसँ शब्द भेल जेना अकस्मात् भवन टूटि कए खसि पड़ल हो । ‘मामा’ आ ‘दास’ अवाक् भय एक-टक देखइत रहलाह । ‘कोनो नमहर वस्तु अपना ऊपर खसा लेने हेत’ कहइत हम शीघ्रतासँ निष्का उत्तरलहुँ । हमरा पाछाँ-पाछाँ कांताक माय आ दास अयलाह । पछारो कोठरीसँ कांता, लगक कोठरीसँ जेष्ठ कन्या

दलानसँ लुरी आ छोटकी मुजी सभ क्यो आबि पहुँचलीह । ओत देखलहुँ—खसल साइकिलक सोम्माँमे पद्मा आ राघेय कनइत मुह बनौने एवं लटकौने ओकरा (साइकिलके) एहन सन देखैत छल जेना मरल दशकंठ राबणक सोम्माँ राम आ लक्ष्मण ठाढ़ होथि ।

राघेय बाजल—‘बाबूजी, साइकिलके’ पद्मा खसा देलक ।’ ‘कत ? वैह खसौलक अछि’ कहइत पद्मा अपन कनइत दृष्टिसँ अपन भोलापन आ निर्दोषिता प्रगट कयलक । मुदा ने जानि दूनू एके क्षणमे किए कानय लागल ? ईसभ देखि दास नाटकक दर्शक जकाँ आश्चर्यक तरंगमे डुब्यो मारैत छलाह । ‘ईश्वर निक कयलन्हि । यदि साइकिल नेना सभपर खसल रहइत त पता नहि जे कि सँ कि भऽ जाइत !’ हम सभ गोटे आइ छोड़लहुँ ।

‘हमर ई सभ अबोध नेनाक हेतु भगवाने मालिक छथि ।’ कहैत श्रीमतीजी बिना पलक मारने अनंत आकाश दिशि देखय लगलीह । ‘ऐ नेना सभसँ नाकमे दम आबि गेल ।’ कहइत हम दांत किट - किटाब लगलहुँ त नेनाक मामा कहलन्हि—‘दूधमुँहा नेना सभ छथि; हुनका डाटलासँ कि नफा ? बोलै-कूदे हुनका सुभूत छैन्ह ।’

बस ओ दृश्य समाप्त भेल । हम तीनू गोटे ऊपर चल गेलहुँ; नेना सभ खेलबाक हेतु चलि गेल; कांता भानस घरमे चलि गेलि आ सभ क्यो अपना-अपना स्थानपर चलि देलन्हि ।

बाजार जयबाक उद्देश्यसँ अलमारीक पास जा क कपड़ा निकालि पहिरइत छलहुँ । एतवेमे भरिसक राघेयक कानब सुननामे आएल । ‘सत्ते ! ओ एहन आह्वान छल जेना कोनो बाघ अथवा भयंकर भूतक अकस्मात देखलापर लगाओल जाइत छैक । दास बहुत घबड़ा गेलाह । नेनाक माम अवाक् रहि गेलाह । दूहुँकेँ काटू त शोणित नहि ।

कांताक भाइ नोचा पड़एलाह, दासो उठय पर छलाह । एतवेमे जाक हम कहलियेन्ह—‘दासजी अखन धरि भरिसक अहाँकेँ पहिल सन्तान नहि भेल हैत’ ओ घबराइते बजलाह—‘कथि लै अहाँ ई अनुमान लगयलहुँ ?

हम हँसलहुँ आ चुप रहलहुँ । हम तीनू निरुत्सा उत्तरलहुँ त राघेय एना जोर-जोरसँ कानय लागल जेना फ्लोरोफोरम देने बिना आपरेशन करसँ पेसेन्ट कनइत एवं पिचिबाइत अछि । पड़ोसीक नेना आ हमर राघेय

एक लोहाक काँटीक हेतु भगड़इत छल । ओकर काँटी ओकरा द देव हेतु हम अपना नेनासँ कहलहुँ । मुदा ओ अपन हठसँ टससँ मस नहि भेल । हमर एको नहि सुनलक । हम हारि मानलहुँ । 'पड़ाइत चोरक लंगोटीए सही ।' राघेयक प्रतिद्वन्दीकेँ हम बुझावए लगलहुँ—'बच्चा कनिए ठहर त हम तोहर काँटी तोरा द देबौ ।' मुदा ओ नहि मानलक एतबेमे ओहि बालकक माय आवि गेलीह । अपना नेनाकेँ कोरामे ल लेलैन्हि आ ओकरा गालमे थापड़ लगवइत—आंखि लाल-पियर करैत कहब प्रारम्भ कयलन्हि—'हम कतेक बेर कहलहुँ, ओहि बदमाश नेनासँ जुनि खेलाह किएक हमर बात नहि सुनैत छइ । बुढ़िबक कहोकेँ !' हमर कांता सेहो ओकर प्रशंसासँ नहि बाँचल । ओ कहय लगलीह—'ऐ पड़ोसमे जिन्दगो काटब बड़ कठिन थीक; कि कएल जाओ ? हाथमे खड़ धरि नहि रहऽ दैत छथि । चिल्हौर जकाँ झपटैत छथि, चिल्हौर जकाँ ।' फुसफुसाइत घरक पछुवाड़मे चलि गेलीह । भरिसक हमर बेटियो ओतै रहल हैतीह । हुनका स्वरमे स्वर मिलबइत लड़इत रहलि; दूनु अन्योक्ति आ वक्रोक्तिक सहारासँ एक दोसरकेँ उपराग दैत रहलि । बेचारे दासक चेहराक रंग गिरगिट जकाँ बदलइत रहल ।

एखन धरि आठ वाजि गेल छल । हम तीनू गोटे होटल जयबाक हेतु तैयार भेलहुँ । कांता हमर तैयारीक कारण बुझि गेलीह ।

'ऐ भाइ ! हम घरेमे इडली (मद्रासी लोकनिक विशेष भोजन) आ कॉफी बनौने छी । होटल जयबाक कि जरूरी छैक ।' कांता अपन भाइसँ बजलीह । 'नेना सभकेँ खोआऊ । हम कनिजे होटल (भोजनालय) सँ अबैत छी ।' हम कहलिऐन्ह ।

'ओ पाहुन ! अखन त एतहि जलखइ क लेब से निक हैत ।' कांताक भाइ अपन दीदीक पक्ष लैत कहलन्हि । दासो हुनक 'हँ' मे 'हँ' मिलबोलन्हि ।

कांताक प्रस्तावक बहुमत भऽ गेल त हमरा चुप रहऽ पड़ल । किछुए क्षण पश्चात् हम सभ पीढ़ीपर बैसि गेलहुँ । तप्पत-तप्पत इडली, आदक चटनो आदि जलखइक चीजसँ भरल चमकैत चानीक तश्तरी (छिपली) हमरा आगाँ आयल । ओकरा देखिए कय दासक मुँहमे पानि भरि अयलन्हि । भोजनक आनन्दमे ओ डुबल छलाह ।

‘जे हो, घरक बनल वस्तु निक होइते छैक ।’ हमर कांताक भाइ कहलथिन्ह ।
‘होटलमे अइठ तश्तरी, अइठे गिलास । ओत घोड़ा आ गदहाक फरक नहि
देखल जाइत छैक ।’ दास हमर सारक गप्पक समर्थन कयलन्हि ।
वेश, हम इडली खायब प्रारम्भ कैल । अपनामे हम एक दोसरक मुँह देखि
लेलहुँ ।

‘जे वस्तु हो चिबाक’ खाएब निक थिक ।’ हम एक स्वास्थ्य सूत्र दोहरौलहुँ ।
‘संभव भऽ सकै तखन ने ।’ दास मुसकियाइत बजलाह ।

‘होम मेड थिंग्स (Home-made things) भोजनक गप्प हमरासँ छूटि
गेलि ।’ कांतमक भाय ‘डिफेन्स’ कैलन्हि ।

एतबेमे काफी आयल चमकैत चानीक बाटोमे । काफीक रंग देखैते दासक
मुँहपर बदहवासो छा गेलैन्ह । सार साहेब (कांताक भाइ) साहस
समेटि कय पीअब आरम्भ कयलन्हि मुदा कि कहू—हुनक मुँह तीक्ष्ण तिक्त
औषध सेवन करबला जकाँ बनि गेलैन्ह । हमरा सन्देह भेल जे कतहु रह
नहि क’ देथि । आँखि मुनि कय गिलास भरि काफी एके घोंटमे हम गटगटा
लेलहुँ । दास नाक मुनिकय नहि मानबला मनकेँ मनवैत-मनवैत पीबि
गोलाह । हम शनैः शनैः उठ लगलहुँ त कांता बजलीह—‘ऐ, अखने उठैत
छी ? आर किछु लऽ लिय ने ! की काफी निक नहि लागल ?’ कांता पुछ-
लन्हि । हम किछु नहि बजलिएन्ह । मुदा दास कहऽ लगलथिन्ह—‘वाह, केहन
स्वादिएट काफी अछि—अमृतो ओकर तुलनामे ठठि नहि सकइछ ।’ एतवे
कहि कऽ हब्बड़ - हब्बड़ किछु सुपारीक टूक लय मुँहमे रखैत ऊपर छतपर
चलि गेलाह ।

जखन हमहुँ ऊपर गेलौं तऽ ऊपरक कोठली नेनाक समुदायसँ भरल छल ।
प्रत्येक कोठलीमे छोट-छीन गोबरक पुतला, गुड़िया, गुड्डा, रंग-बिरंगक लत्ता,
शीशाक टुकड़ी, कतेक रासे कागत, सिकरेटक पेटी एम्हर-ओम्हर पड़ल
छल । पाहुनक रूपमे आयल दास की बुझलन्हि—हम बुझि नहि सकलहुँ ।
हम त लाजसँ गड़ल जाइत छलहुँ । कोठली साफ करऽ लेल बड़की कन्याकेँ
बजयलहुँ । ओहि सभ पदार्थकेँ ओहिठामसँ हटबौलहुँ । तखन जाक खाट
ओछा हुनका बैसाओल गेल । दस बजे धरि हम तीनू गोटे एम्हर-ओम्हरक

गप्प करइत छलहुँ । मुदा नीचाक हिस्सामे इरला, दास-परिहास आ हँसीक लहर छठि रहल छल । कि कह-सोरे-सोरे, बस, चार किछु नहि । प्रत्येक पाँच मिनिटमे हम जाइ आ कोनो न कोनो कनइत बच्चाकेँ उठा लायी तथा ओकरा समझा-बुझाक फेर नीचा पठा दिअइ—इएह क्रम हमर बहुत काल तक रहत ।

दस बजलाक बाद भोजनक हेतु आह्वान भेल । स्नान करय हेतु हम चीनू उठल । दोसरक इज्जति पहिने करक चाहो—एहि बिचारसँ दासकेँ स्नान करवक हेतु पठाओल । मने मन हमरा संतोष होइत छल जे ‘बाथ-रूम’ (स्नानागार) क गागरमे स्वच्छ जल, लोटा, साबुन, गमछा आदिक निक प्रबंध हैत । मुदा, दास गागरक पानिकेँ देखि कए हमरासँ कहलन्हि—‘घरक पछुआइक इनारपर नहायब ।’ ‘एना जुनि करू; इनारसँ पानि निकालब कठिन छैक । एतऽक इनार बड़ गहीँड होइ छैक । अतः ओहि पानिसँ स्नान करब निक हैत !’—हम अनुरोध कैलहुँ । दास विवश भय ई कहैत—‘परवाहि नहि; हम पानि घीचि सकइत छी’—ओइ ठामसँ निकसि गेलाह । हम गागरक लग जाक देखलहुँ पानि बड़ खराब छल आ कोइलाक’ टुकड़ी ओहिपर नचैत छल । ‘एह कांता; ई कि अछि ? स्नानक हेतु खराब पानि कियेक रखने छी ?’ हम प्रश्न कैलहुँ । ओ घबड़ाइते अयलीह आ पानिकेँ देखिकऽ बजलीह—‘वैह ननकिरबीक’ काज थिक । हम कि करू ?’ तमसाइत मुद्रामे चलि गेलीह । पीढ़ी, चानीक चमकइत थारी, चानीक’ लोटा आ छोट-छोट बाटी शानसँ कांता सांठलन्हि । आतिथ्य सत्कार बड़ धूमधामसँ होइत छल । हम ई सोचइत बैसल ई स्वादिष्ट भोजनसँ ओ अपमान दूर हैत जे काफ़ीक’ कारणेँ भिनसर भेल छल ।

भानसमे कि कि बनैयलहुँ अछि ? हम कांतासँ प्रश्न कएलहुँ । ‘हम दास केँ अपन प्रभाव देखाब चाहै छी । ओ जे सभ दिन हमरा ओहिठाम साधारण रूपसँ दू तीन प्रकारक’ तरकारी, तीन चटनी, तेतरिक खटमिट्टी आदि कतेक रासे वस्तु भोजनमे रहैत अछि ।’

‘परसइ छी ने’—कहैत कांता चुप्पी साधि लेलन्हि । भरि थारी तरकारी, दालि, अंचार, चटनी आदि वस्तु परसल गेल । तपते-तपत पुरी परसल गेल । पान

जाइत छथि, एहि उपलक्ष्यमे खीरो बनाओल गेल। हम स्वतः मुग्ध होइत छलहुँ जे पहुँच केहन निक भऽ रहल अछि। 'वेश, भोजन प्रारम्भ कयल जाओ हम कहलिन्ह।'।

'कांता, दालिमे किछु करिऔन आवि गेल छैक।' हम बजलहुँ। हँ, हँ, राहड़ि उलाव समय ननकिरबी बड्ड हल्ला मचौने छलीह। आहि दड़वड़ीमे राहड़ि किछु विशेष भुंजा गेल।' कांता जबाव देलन्हि।

दास पहिने दालि सब किछु खएलन्हि। तरकारी फेंट कऽ भात खाइत छलाह हम मने मन अतिथिक' सन्तोष के देखि मुग्ध होइत छलहुँ। एतवेमे दास भोजनमे विराम लगा हमरासँ प्रश्न कैलन्हि—'आइ-काल्हि नोन कि भाव बिकाइत छैक ?

'कि, कि भेल !' कान्ता घबराइत आतुरतासँ पुछलथिन्ह। कांताक भाय तरकारीकेँ चिखि कऽ मुस्का देलन्हि। हमहुँ तरकारीक स्वाद देखल त हमर माथ एकदम भुकि गेल। ओ तरकारी नहि, शत प्रतिशत नूनक ढेप छल। अनुमान भेल जे सेर भरि नून ऐ मे मिलाओल गेल अछि।

हमरा शरीरमे आगि लागि गेल। कांता अपन सन मुँह ल कऽ रहि गेलीह। हुनक मुँह पीअर भऽ गेल। 'ओहि बदमाश, राघेयकेँ घोंचि कऽ ल आऊ त।' हम फुफकार छोड़ैत कान्तासँ कहलहुँ। कांता 'मीन-मेष' निकालैत छलीह। हमरासँ रहल पार नहि लागल। स्वतः जा कऽ ओकरा ल अएलहुँ। हम ओकर तरहथी चटलहुँ त बड्ड नून-छड़ाइन लागल। 'लल्ला तों एहि बाटीमे नून रखने छलहिक ?' हम राघेयसँ मनोवैज्ञानिक ढंगसँ पुछलियेक। 'एहि चङेराक लग हम रखने छलहुँ'—राघेय गर्वित स्वरमे बाजल।

'ओकर काज सतत भानसे घरमे होइ छैक। मायकेँ सभ काजमे दखल दैत रहैत अछि। ओकरे काज थिक ई।' कहैत कांता तमसाइत रहलीह।

'कि करथुन्ह ! नेना सभ जे ठहरलन्हि, ओ भोजन छोड़ि देलथिन्ह।' कहइत कांता तेतारिक खटमिट्टी परसलकैन्ह। बेचारे दासक पेटमे मुसरी कुदइत रहैन्ह। अतएव भातमे खटमिट्टी मिला कऽ खाय लगलाह। उपरसँ आर खटमिट्टी कांता परसलकैन्ह; ओ बड्ड रुचिसँ खाय लगलाह। हमहुँ खटमिट्टीए सब खाइत छलहुँ। हम देखलहुँ कांताक भाय परसल भोजनसँ कोनो वस्तु

निकालि-निकालि कऽ थारीक लग रखइत छथि। एतवेमे दास—‘ई कि थिक?’ कहइत बोइलाक दूटा दूकड़ीक आविष्कार अपन भोजनक सङ कैलन्हि। कांता अपन मुँह छोट कऽ लेलन्हि। हाय ! अभागलि विडंबना, ‘सभ वस्तु खराब भ गेल।’ कांता बडु प्रशंसामे बजलोह।

‘गर्मीक दिनमे निरु माटि नहि भेटइत छैक’—क्षमा मडैत कांता हमरा लोकनिमे भट्ठा परसलीह। येन-केन प्रकारेण भोजन कय उठलहुँ।

दासकेँ ओहि दिन जयबाक छलैन्ह मुदा ओ आग्रह कैलन्हि—‘हम एखने चल जायब। हुनकासँ हमहुँ आग्रह कैतहुँ—अखन की शीघ्रता अछि ! थोड़वे काल आराम कऽ लिअ; पश्चात जलखइ कय कऽ जा सकैत छी। हमर बहुत आग्रह अनुरोधक वेतरेक परवाह कैने बजार (हाट) मे आवश्यक कार्य अछि कहैत तुरत विदा भऽ गेलाह।

कांतासँ हम कहलियेन्ह—‘दास चलि गेलाह।’ हाय ! ई गप्प केहन भ गेल ? हमरा ओ डाँटय लगलीह—‘अहाँ हुनकासँ किएरु ने अनुरोध कएलियेन्ह जे आइ राति धरि ओ थम्हि जइतथि।’

भिनसरेसँ हमरा ओत दासक लेल जे पहुँचै भेल वैह बहुत भ गेल ‘जीवन मे कथमपि बिसरियो क हमरा घर ओ पैर नहि रखताह।’ हम कलियेन्ह। वेश नहि औताह त नहि आवथु। एतबा त हुनका बुझबाक चाहियेन्ह ई बचावला (मेमा वला) घर थिक।—कांता गर्वसँ कहलन्हि।

‘वर्ण वर्ग धर्मक विभेद तजि वृद्ध युवक नर-नारी
श्रमिक गृहस्थ बुद्धिजीवी विद्वान अपढ़ व्यापारी
ललितकलाविद ज्ञानी

मातृ-भूमि-अभिमानी

कर तंव यश नभ गुंजित

सुनितहि जय मिथिलाक घोष अरिदलक शक्ति हो शिथिला।’

—‘अणु’

जयमंगलगढ़क ऐतिहासिकता

मिथिला अपन गर्भमे महान ऐतिहासिक तत्वकेँ रखने अछि । एकर ऐतिहासिकताक प्रबल उदाहरण जयमंगलगढ़ अछि । मिथिलाक ई ज्ञानमयी, पराक्रमशीला एवं तपोमयी भूमि आइयो अनुसन्धानकर्ता लोकनिकेँ आह्वान कए रहल अछि ।

मिथिला अपन गर्भमे महान ऐतिहासिक तत्वकेँ रखने अछि । एकर ऐतिहासिकताक प्रबल उदाहरण जयमंगलगढ़ अछि । मिथिलाक ई ज्ञानमयी, पराक्रमशीला एवं तपोमयी भूमि आइयो अनुसन्धानकर्ता लोकनिकेँ आह्वान कए रहल अछि । तथापि जहाँ धरि हमरा एहि गढ़क अध्ययन अछि त यैह अनुमान करैछी जे ई गढ़ अत्यन्त प्राचीन अछि एवं एक बहुत विस्तृत क्षेत्रमे स्थित अछि । ई गढ़ हसनपुररोडसँ प्रायः बारह मील दक्षिण-पच्छिम कोणमे पाओल जाइछ ।

दन्तकथाक आधार

बहुत पता लगौनेपर एक दन्तकथा आओर किछु पुरातत्व सम्बन्धी वस्तुप्रकाशमे आयल । जकर वर्णन आगू कएल जाइछ । दन्तकथाक आधार ई अछि । एतए हम दन्तकथाक रूप आओर सत्यक आधार प्रदर्शित कए रहल छी ।

‘बहुत पूर्व कालमे एतय जयमंगला नामक महारानी रहैत छलीह । हुनक राज्यक सीमा छोट नहि छल । एक समयक गप्प थिक छी जे मिथिलाक किछु प्रभावशाली राजा लोकनि महारानी जयमंगलाकेँ असहाय जानिकेँ हुनक राज्यकेँ हड़पि लेबाक चेष्टा कए लगलाह ।

महारानी जयमंगला एक वीर क्षत्राणी छलीह । ताहि हेतु ओ किनको आश्रय स्वीकार नहि कैलन्हि । परिणामस्वरूप हुनका लड़ाइक भय देल गेलन्हि । जयमंगला किछु चिन्तित भए गेलीह । हुनक गढ़क तीन भाग सुरक्षित छल किन्तु ओकर एक भाग अरक्षित छल जहि फुजल भागसँ शत्रुक आक्रमणक विशेष संभावना छल । एहि हेतु रानी अपना राज्यमे ई घोषित करवाए देलन्हि जे यदि क्यो व्यक्ति हमर गढ़क अरक्षित भागकेँ रातिभरिमे सुरक्षित कय देत त ओ हमर राज्यक चतुर्थ अंशक भागी होयत आओर अपनासँ विवाहक सेहो प्रलोभन देलथिन्ह । किछु दैत्य लोकनि एहि काजकेँ पूर्ण करबाक लेल कटिबद्ध भए गेलाह । रातिक तेसर पहर धरि गढ़क काज पूर्ण होएवा पर छल । ई देखिकेँ रानी चिन्तित भए गेलीह, तदुपरान्त किछु सोचिकेँ मुरगाक द्वारा भोर होएबाक सूचना द’ देलथिन्ह । मुरगाक

शब्द सुनैत देरी दैत्य सभ भोर भए गेल ई जानि अपन-अपन छिट्टाक मोटि ओतहि फेकि भागि गेलाह । एकटा नांगड़ दैत्य अपन असफलतापर खिसियाएकेँ रानीक एक अंग (एक स्तन्य भाग) केँ काटिकेँ भागि गेल । तकरा बाद रानी पाथर भए गेलीह ।'

दन्तकथाक पुरातत्व सम्बन्धी विश्लेषण

जयमंगलागढ़ एक विस्तृत 'काबर' नामक भोलक मध्यमे अछि । अपन अनुभवक अनुसार गढ़निर्माण-प्रणालीक तीन गोटा भेद (अछि) छल ।

(क) जखन खुजल वा पटपट (सपाट) मैदानमे गढ़ बनबैक आवश्यकता पड़ैत छल तखन गढ़क चारूकात गढ़क रक्षाक लेल खूब गहीँड़ खाधि कोड़ल देल जाइत छलैक ।

(ख) जखन गढ़ कोनो नदी, समुद्र वा भोलक कातमे बनबैक होयत छल तखन ओकर एक भागक रक्षा ओएह जलीयभाग करैत छल आओर ओकर तीन दिशि खूब ऊँच मजबूत पाथरक वा पजेबाक दीवार बना देल जाइत छलैक ।

(ग) जखन गढ़ कोनो छोट-मोट पहाड़ी सभपर बनैबाक होइत छल तखन ओकर चारू भाग ढार बनाए देल जाइत छलैक जाहिसँ शत्रु लोकनि सुलभतासँ ऊपर नहि चढ़ि सकथि । तथापि पूर्ण सुरक्षाक हेतु दीवारक भीतरी भागमे शत्रुसँ लड़बाक हेतु नियमपूर्वक व्यवस्था रहैत छलैक ।

उपर्युक्त नियमक अनुसार जयमंगलागढ़ प्रथम गढ़ निर्माण-प्रणालीमे अबैत अछि । ओतए एक गोटा रानी जयमंगलाक प्रस्तरक मूर्ति स्थापित अछि जे ओतहि प्राप्त भेल छल । तथापि ओहिठामक प्राप्त वस्तु सभसँ ई पता लगैत अछि जे ई गढ़ गुप्तकालक छी किएक त प्राप्त मूर्ति सभमे एक गोटा भगवान विष्णुक वराह-अवतारक कारी पाथरक मूर्ति अछि जे सनातन पौराणिक धर्मसँ सम्बन्ध रखैछ । एहि तरहक वराह अवतारक मूर्ति सभ बहेड़ा आओर तिलकेश्वरगढ़मे सेहो भेटल अछि । भूतिक देह मानुषक समान अछि आओर शिरस्थ भाग वराहक समान ! वराह अपन दूनु दाँतपर प्रलय-

कालीन जलमे निमग्न होइत पृथ्वीक उद्धार कए उठौने छथि । एही तरहक मूर्ति उदयगिरि (मध्यभारत)मे पाओल जाइछ जे चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यक द्वारा स्थापित कएल गेल छल । फेर ठीक ओहने कला आओर शैलीमे भगवान नरसिंह अवतारक मूर्ति सेहो भेटल अछि ।

कारी पाथरक मूर्ति मिथिलाक कलाक एकाकी विशेषता अछि । उत्तर विहारमे विशेषतः कारीए पाथरक मूर्ति पाओल जाइत अछि । सम्प्रतिहिमे भगीरथपुरमे जे देवी देवता सभक मूर्ति आओर शिलालेख पाओल गेल अछि ओहो सभ कारीए पाथरक छैक । मंगलगढ़ (दरभंगा जिला)मे सेहो गुप्तकाकीन कलाक अनुपम नमूनाक रूपमे भगवान बुद्धक मूर्ति आओर हाथीयुक्त स्तंभ पाओल गेल अछि । जयमंगलगढ़मे जे मूर्ति पाओल गेल अछि ओहिमे सेहो भौतिक सौंदर्यक अपेक्षा आध्यात्मिकताक रंग, आन्तरिक शान्ति एवं ओजक जे दृश्य भेटैत छैक से अवर्णनीय अछि ।

कहल जाइत अछि जे कि गढ़ परक पुरान जंगल केँ साफ करइत काल उपर्युक्त मूर्ति सभ भेटलैक आओर एकर अतिरिक्त मांटिक किछु खिलौना, मालाक दाना, किछु छोट-छोट मुद्रा, नक्काशीदार पजेबा सेहो पाओल गेल अछि । गढ़क दक्षिण भाग एखनों धरि किछु अंशमे सुरक्षित अछि । अशोके जेकां गुप्तकालक राजा लोकनि सेहो पाथरक स्तंभ बनौलन्हि किन्तु अन्तर दूनूमे ई अछि जे गुप्त कालीन पाथरक स्तंभ कोणादार होइत छल आओर मौर्य कालक गोल - गोल । ठीक एहि प्रकारक एक गोटा कारी पाथरक कोनदार स्तंभ गढ़क बीचमे मांटिक सतहसँ चारि फिट ऊँच निकालल अछि किन्तु एकर अधिकांश भाग नीचहिं अछि । नीक जेँका देखलासँ ई बुझि पड़ैछ जे ई स्तंभ कोनो विशाल भवनक अंग अवशेष छी । ई स्तंभ अजन्ता आओर एतौराक गुफामहक स्तंभ जेँका कलायुक्त एवं अनुपम सौन्दर्यमय अछि । एहि स्तंभकेँ देखने इएह बुझि पड़इत अछि जे ई गढ़ कोनो विशाल भवनयुक्त रहल होएत आओर संभवतः ओहि भवनक अवशेष मांटिक तर नुकैल होएत । गढ़क क्षेत्र प्रायः एक सै एकड़क होयत । एकर क्षेत्रक विस्तारसँ इएह अनुमान लगैछ जे ई गढ़ अपना समयमे समृद्धशाली रहल होएत किन्तु

कालके कठोर आघातसँ धरतीक ऐश्वर्य ओकरहिँ ओँचरमे नुकाए रहल अछि जे खुनलासँ प्रकाशमे आबि सकैछ ।

गढ़क चारुकात पसरल 'काबर' भीलसँ एकटा नहर निकलल छल जाहिसँ ओही राजक जमीनक सिंचाइ होइत छलैक । आइ-काल्हि विहार सरकार फेर ओही नहरकेँ सिंचाइ योग्य बनाय देलक अछि ।

दन्तकथाक अनुसार महारानी जयमंगलाक मूर्ति जे पाथरक रुपमे अछि ओकर अंग (स्तन्यभाग) आइयो खण्डित छैक किन्तु एहनो भए सकैछ जे जंगलकेँ साफ करैत काल मूर्तिक ओ अंग टूटि गेल होएत । एतय पुरातत्वक अनुमान इएह भए सकैछ । जे किछु होअए, किन्तु रानी जयमंगलाक मूर्ति एक विशेष शैलीक थिक ।

उपर्युक्त अनुसंधानसँ स्पष्ट होइछ जे ई गढ़ गुप्त - कालक छी । गढ़क खोदाइसँ पुरातत्व - सम्बन्धी विशेष वस्तुक प्राप्त होएवाक आशा अछि । अतएव अतीतकालक ओहि सुप्त गौरवमयी भूमिपर गेला उत्तर हृदयसँ सभ अनायासहिँ ई शब्द बहरा जाइछ :

जिसे देख सुधि आ जाती है

उस बीते जीवन की ।

† किछु दिन पूर्व एतए चानीक पातर-पातर आओर लिबल बहुतरास मुद्रा पाओल गेल अछि ।

कतेक विद्यापति पिपासित

किन्तु उदना तदपि पाथर ॥

से जटा अछि सूखि गेल

अहींक प्रायः आइ ऊदन !

तेँ एतय मधुमास मे

कवि कोकिलक मधुवनहिँ पतकर ॥

कोकिलाष्टक

श्रीलक्ष्मीपतिसिंह

अहीँक नामेँ छथि धन्य मैथिली
समेटि काव्यात्मक दिव्य काकली ।
अहीँक विद्यापति ! कीर्ति आइयो
विभावरी वेधि प्रकाशदायिनी ॥

प्रकाशे ओ अद्यावधि बनल गौरव अछि यद्यपि अमर भए,
मुदा तैयो काव्ये विषमतम पाशक विवशता ।
कहाँ ओ प्रज्ञा वा नवरस - सुधासिक्त - सरिता,
कहाँ रासे ! विद्यापति ! कतय अद्वैत गरिमा !!

जे जे त्रिभुक्ति लए कए कए कवित्व, कवि ! काव्ये सजाओल जे,
कालैक काल बनि, लोकैक ताल पर सङ्गीत गाओल जे ।
से से सदैव शिव - सत्यैक टेक बनि सौन्दर्य देकेँ जकाँ,
सप्त स्वरूप सुर स्रोतैक गर्भ मनु सप्तर्षि - टेकेँ जकाँ ॥

आव रहत नहिँ टेक, विवेक न चाँचल ।
अहँक अमर निधि धधकए, जत तत आँचल ॥
अपन विसरि हम आनक पाछु वेहाएल,
भलफल नयन न पेखय कत कि हेराएल ॥

अमर अहँक कवि कोकिल (हे), निधि राशि अशेष,
हमर अभाग गुनल तहि (हे) हम काँच विशेष ।
नाम अहँक रटि करइत छी केवल निज गान,
किन्तु शिथिल लखि तिरहुति कएँ हँसइत अछि आन ॥
विद्यापति ! एखनहु धरि जे तुअ नवरसदान,
सुन्दर सत्य शिवक निधि भए जगकरए सुदान ।

के तुअ विनु विद्यापति, तिमिर नसाओत (हे)
के पुनि शीत भगाए वसन्त वसाओत (हे)
ललित कला तुअ मूक, विषम कवि जीवन (हे)
कोकिल ! तुअ विनु सून, मिथिक नव मधुवन (हे)

तएँ आबि जाइ, कछि विद्यापति ।

सहि रहाल मैथिली छथि दुर्गति ।

अवतरित होउ, ई ध्यान घरी,
नहि 'सत्तावन' सओ भीति करी ॥

सतावन सहजहिं नहिं मानत ।

स्वच्छन्द युगक स्वच्छन्द छन्द, अणु युगक देखि स्वच्छन्द द्वन्द, संस्कृति
थर-थर छथि काँपि रहलि;
युग करइछ ओकर चीर हरण, घसि गेल घाट शीलक, संयम पथअष्ट
अहुरिया काटि रहल,
कलि हाँकि रहल यतिगण लयतक, पिङ्गल डिङ्गल सभ डाहि चलल
तएसावधान भए विद्यापति, आबो, यदि आएव इष्ट रहए ।



अमर

श्रीरामसेवकठाकुर 'सेवक'

कहू, जगत के अमर बनल अछि ?

महा महा यौद्धाक नाम सुनि ,

हृदय प्रकम्पित हुआए अखन पुनि ,

शिला विनिर्मित मूर्ति देखि कए ,

झड़ झड़ झड़ झड़ अश्रु कहै अछि ॥

कहू, जगत के अमर बनल अछि ?

महा धनी विजयी के देखल ,

धन बल सों जे सभकें जीतल ,

जिनकर आ जे मुइल कते जन ,

हुनक एक नहि अस्थि भेटै अछि ॥

कहू, जगत के अमर बनल अछि ?

शिला सोन के महल जतए छल ,

महामत्त गज जतए भुमै छल ,

डीह आइ ओ श्वेत बनल , अति

आर्तनाद कए कानि रहल अछि ॥

कहू, जगत के अमर बनल अछि ?

राजा रंक समान बनल जत ,

टरि सकताह सुरेश कतए तत ,

ब्रह्मा, विष्णु, महेशहुँ के जे ,

क्षण भरि मे चीबा जाइत अछि ,

घन्य-घन्य ओ 'काल' अमर अछि ॥

कहू, जगत के अमर बनल अछि ? ॥

मैथिली साहित्यमे नाटकक प्रगति

संस्कृतमे लोकोक्ति अछि, जे 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' एहिसँ ई बोध होइछ जे बहुत पूर्वहिसँ काव्यमे नाटकक स्थान महत्वपूर्ण रहल अछि । लोक अपन - अपन रुचिक अनुकूल नाटक एवं अन्य काव्यक रचना प्रारम्भ कएल । जनसाधारणक मनोरञ्जनार्थ नाटक प्रमुख साधन बुझल जाइत छल । अतः भिन्न - भिन्न क्षेत्रमे नाटक-रचना प्रारम्भ भेल ।

संस्कृतमे † लोकोक्ति अछि, जे 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' एहिसँ ई बोध होइछ जे बहुत पूर्वहिसँ काव्यमे नाटकक स्थान महत्वपूर्ण रहल अछि । संस्कृत तथा प्राकृतभाषा जखन जनसाधारणक हेतु सुगम नहि रहल तखन आधुनिक आर्यभाषा सबहिक जन्म भेल । लोक अपन - अपन रुचिक अनुकूल नाटक एवं अन्य काव्यक रचना प्रारम्भ कएल । जनसाधारणक मनोरञ्जनार्थ नाटक प्रमुख साधन बुझल जाइत छल । अतः भिन्न-भिन्न क्षेत्रमे नाटक-रचना प्रारम्भ भए गेल । संस्कृतक आधार पर एकर शरीरक निर्माण होअए लागल । परञ्च एकर विकास तीन रूपमे भेल; स्थान भेदक कारणे । एक मिथिला दोसर नेपाल एवं तेसर असममे ।

मिथिलामे

मिथिलामे १५५७सँ पूर्व वा खण्डर्वलाकुलसँ पूर्व नाटकक परम्पराक कोनो विशेष इतिहास देखबामे नहि अबैत अछि । ज्योतिरीश्वरठाकुरक लिखल 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थमे एहि प्रसङ्गक उल्लेख भेटैत अछि जाहिसँ ई पता लगैछ जे नाटकक विकास राजदरबारमे नहि भएकेँ स्वतन्त्र रूपसँ भेल होएत । एहि हेतु नाटक सम्बन्धी ऐतिहासिक सामग्रीक किछु अभावसन प्रारम्भमे देखि पड़ैछ ।

मिथिलामध्य दूइ प्रकारक नाटक उपलब्ध होइछ । एक जाहिमे गद्य संस्कृत तथा प्राकृतमे अछि तथा गीत मैथिलीमे । एहन नाटक कोर्त्तानियाँक नाटक एहन अछि जाहिमे कतहु प्राकृत एवं संस्कृतक नाम नहि रहैछ, पूर्णतः मैथिलीमे ।

कीर्तनियों नाटकक परम्परा महाकावि विद्यासागरजी प्रारम्भ होइछ ।
 दिनक रचित 'गोरक्षविजय' तथा 'समिपकजरी' बरफण्य होइछ ।
 'गोरक्षविजय'क रचना विद्यापति शिवविद्वक आजायै कएल । एहिमे
 कबीरकसन संस्कृतमे अछि तथा गीत मैथिलीमे । 'समिपकजरी' पूर्ण
 संस्कृतमे अछि । विद्यापतिक पद्धति सोबिन्द 'नलचरित्र' नाटक मिथिल
 जाहिमे गद्य प्राकृतमे एवं गद्य सरल मैथिलीमे अछि ।
 एकर पश्चात् रामदासजी कृत 'आनन्दविजयासिंधु' नाटक अछि, जे
 गणित नाटक-साहित्यक एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ अछि । ई नाटक अत्यन्त
 प्रसिद्ध प्राप्त कएल । एकर रचयिता सोबिन्ददासजीक छोटा भाए
 छलधिन्द जे महाराज सुन्दरदासजीक समयमे एकर रचना कएलन्हि ।
 एहिमे कविक कवित्व शक्ति तथा क विरह वर्णनमे त देखै

कि कहन, ओ रे, तौहरि कहनि पुछिअ जनु तुअ बिनु ।
 चासि कुसुम सनि घर तनु ।
 चानन, ओ रे, चउगुन चैडकि चडैकि रह, धनि कह ।
 कोन देह देलहुतवह ॥
 विरचल, ओ रे, शीतल शयन नलिनि नृप, धन कए ।
 परमहि करणैससम सए ।....."

मध्यकालीन नाटक लोकनिमे उभापति उपोद्घाटक नाम अग्रगण्य अछि ।
 पारिजातहरण नाटक मात्र दिनक लिखल हमरा लोकनिके उपलब्ध
 अछि । कथानकक मूल कथाएँ एहिमे अन्तर केवल पतवार अछि ज
 पारिजातहरणमे प्रद्युम्नक स्थानमे अर्जुनकेँ कृष्ण अपना सङ्ग युद्धमे
 लए जाइत छथि ।

नाटकक कथा - वस्तु समष्टित अछि । अन्य कथानक मूल कथाएँ अज्ञा-
 अज्ञी रूपस सम्बन्ध अछि ।

कविमणी तथा सत्यभामाक चरित्रमे विरोधक सुन्दर प्रदर्शन देखाओल
 गेल अछि । नाटक वीर-रस प्रधान तथा हास्यक सजिवेश उचित तथा
 कलात्मक अछि । उपमा एवं उल्लेख बेस स्वभाविक भेल अछि । एहि
 नाटिकाक ई गीत मिथिला मध्य अत्यन्त प्रसिद्ध प्राप्त कएल अछि:

हरि सौ प्रेम आस हम लाओल, पाओल पारभव ठाये ।

जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ आतप भेल परिणामे... आदि

उमापति उपाध्यायक पश्चात् रमापति, नन्दीपति, गोखुलानन्द, कर्णजया-
नन्द, शिवदत्त आदि नाटककार लोकनिक नाम उल्लेखनीय अछि ।

उषाहरण नाटकमे लेखक रत्नपाणि एहि दिशि नवीन प्रयोग कएल । राम-
लीलाक शैलीपर एहि नाटिकाक निर्माण कएल गेल । वर्णनक दृष्टिसे ई
नाटक अत्यन्त सफल भेल अछि । एहिमे एक नवीन पात्रक प्रयोग कएल गेल
अछि जेकर नाम थिक तटस्थ आओर जे बीच-बीचमे आवि कै नाटकमे
कथाक असम्बद्धताकेँ हटबैछ । एहिमे वाणासुर, उषा एवं-अनिरुद्धक चरित्र-
चित्रण कएल गेल अछि । चरित्र - चित्रण त ओतेक उत्कृष्ट नहि भेल अछि
किन्तु ठाम-ठामपर वर्णन अत्यन्त चमत्कार पूर्ण भेल अछि । मैथिल व्यवहार
सबहक सेहो उल्लेख भेटैछ जे नाटकक रोचकता बढ़ा दैछ । नाटकमे
लेखक अपन पूर्ण परिचय देल अछि ।

रत्नपाणिक पश्चात् एहि परम्परामे दुइ नाटककार आओर भेलाह भानुनाथभा
जे 'प्रभावतीहरण' लिखल ओ 'उषाहरण' आओर 'माधवानन्द' हर्षनाथभा
लिखल ।

भानुनाथक स्थान ओतेक उच्च नहि । एहि परम्परामे हर्षनाथ विशेष यश
प्राप्ति कएल । ई संस्कृत-काव्य परिपाटीक निर्वाह करैत एक अभिनव शैलीक
निर्माण कएल । हिनक नाटकमे चरित्र-चित्रणक सङ्ग-सङ्ग स्वाभाविकतापर
विशेष ध्यान देल गेल अछि । पात्र लोकनिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सेहो ई
अपन नाटकमे प्रस्तुत कएल अछि । कवित्व शक्ति सेहो हिनक तीव्र छल ।
हिनक ई पंक्ति मैथिली-साहित्येयामे नहि भारतीय साहित्यहुक अमूल्य निधि
मानल जाइछ "धीवर अङ्क मयङ्क तरणि चढ़ि शशिकर जाल पसार । उडुगन
मीन बकाय चलल जनि गगन पयोनिधि पार ॥" ई मिथिलेश लक्ष्मीश्वर
सिंहक दरबारमे छलाह । हिनक समय उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम भाग थिक ।
कीर्त्तनियाँ नाटक सबहक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे ओ कविता ओ
संगीत-प्रधान नाटक होइत छल । हास्यक समावेश सेहो आवश्यक बुझल
जाइत छल । कथोपकथन संस्कृत एवं प्राकृतमे भेल करैत छल तथा पद्य
मैथिलीमे । कखनहुँ कखनहुँ ओही गीतक आशयक श्लोक सेहो दए देल
जाइत छल ।

कोत्तनियों नाटकक पश्चात् जे नाटक मैथिलीमे लिखल गेल या लिखल जाइत अछि ओ पूर्णतः मैथिलीमे । जीवनकासँ एहि प्रकारक नाटकक रचना होअए लागल । ई काशी नरेशक दरबारमे रहैत छलाह । दिनक लिखल दुइ नाटक 'सामवती पुनर्जन्म' तथा 'सुन्दर संयोग' तथा एक सट्टक 'नर्मदा-सागर' उपलब्ध अछि । जीवनका प्रथम नाटककार थिकाह जनिक ध्यान पौराणिक कथानककेँ छोड़ि समाजक दिशि गेल । ई सरल, सूक्ष्म एवं भाव-पूर्ण भाषामे मिथिलाक ग्रामीण जीवनक सजीव चित्र उपस्थित कएल अछि । ठाम - ठाम पर हास्यक छुट 'सुवर्णे सुरभि'क काज करैछ ।

हिनक समयमे रंगमञ्चक अभाव सन छल । लोक पारसी कम्पनीसँ विशेष प्रभावित भए रहल छल । पारसी शैलीपर लिखनिहार सफल नाटककार लोकनिमे मुन्शी रघुनन्दनदासक नाम आदरसँ लेल जाइछ । हिनक लिखल 'मिथिला नाटक' अछि जे यत्र-तत्र सफल पूर्वक अभिनीत भेल अछि । एहिमे मिथिलाक उत्कर्ष प्रधानतया प्राचीन कालमे देखाओल गेल अछि । हिनके लिखल 'दूताङ्गद व्यायोग' संस्कृतमे लिखल नाटक उपलब्ध अछि ।

मैथिली भाषामे मिथिलावासीक रुचिक कारण किछु अनुवादक सेहो एहि क्षेत्रमे उतरलाह तथा किछु सुन्दर एवं सफल अनुवाद सेहो प्रकाशित भेल । सरसकवि श्रीईशनाथभा 'अभिज्ञान - शाकुन्तल'क गद्य - पद्यमे सरल एवं सरस अनुवाद कएल । हिनकहि अनूदित सूद्रककृत 'मृच्छकटिक' सेहो प्रकाशित भए गेल अछि । श्रीजोवानन्दठाकुर भाषाक सब नाटकक गद्यमय अनुवाद उपस्थित कएल अछि एवं श्रीगोविन्दभा 'मालविकाग्निमित्र'क अनुवाद गद्य-पद्यमय कएल अछि ।

मौलिक नाटक सेहो एमहर लिखल जाए लागल अछि । श्रीईशनाथभाक रचित 'चोनीक लड्डू', शारदानन्दभाक लिखल 'फेरार', दामोदरभाक कृत 'गान्धर्व-विवाह' विशेष उल्लेखनीय अछि । नाटकक परम्परा एखन जीवित अछि किन्तु रंग-मंचक अभावक कारणेँ अभिनयक दृष्टिसँ ओहन सुन्दर नाटक नहि प्रकाशित भए रहल अछि । अंगरेजी साहित्यक प्रभावक कारणेँ एकाङ्की नाटक सेहो आब सेहो यथेष्ट लिखल जाए लागल अछि । एकाङ्की-नाटककारमे प्रो० श्री तन्त्रनाथभा विशेष उल्लेखनीय छथि । हिनक एकाङ्की नाटकक संग्रह 'एकाङ्की चयनिका' नामसँ प्रकाशित भेल अछि ।

नेपालमे

नेपालमे मैथिली नाटकक प्रचार एवं प्रसार दिसि ध्यान देलासँ ई देखि पड़ैछ जे नेपाल तथा मिथिलाक सम्पर्क अत्यन्त प्राचीन अछि । मिथिलाक प्राचीन राजधानी जनकपुर वर्तमान नेपाल सीमाक अन्तर्गत अछि । मिथिला तथा नेपालमे आवागमनक सुविधा होएबासँ मिथिलाक अनेक व्यक्ति समय पड़लासँ नेपाल चल गेलाह । कहल जाइछ जे मिथिलाक प्रसिद्ध राजा हरिसिंहदेव मुसलमानसँ पीड़ित भएकेँ नेपाल गेलाह आओर ओतहि भातगाँवक समीप अपन निवासस्थान निश्चित कएल । ई विषय १३२३ ई० क थिक । हरिसिंहदेवक पश्चात् मानसिंह तथा श्यामसिंह सत्ताइस वर्ष पर्यन्त नेपालमे राज्य कएल । मैथिल लोकनिक वैवाहिक सम्बन्ध सेहो ओमहर होइत छल । एहि सब कारणसँ मैथिलीकेँ नेपालमे प्रमुख स्थान प्राप्त भेल । डा० बागची एकठाम लिखने छथि—“नेपालेर प्राचीन वंशेर ओ प्रभावसम्पन्न व्यक्तिदेर शिष्टार भाषा छिल मैथिलीकारण ताँदेर अनेके ई मिथिला थेके गिये छिलेन ।” नेपालमे नाटकक परम्परा चौदहम शताब्दसँ प्रारम्भ होइछ । जयस्थिति-मल्ल सन् १३८० सँ १३९४क बीच ‘रामायण तथा भैरवानन्द’ नाटक लिखल । नाटकक ई परम्परा चलैत रहल तथा नेपालहिमे एकर दुई केन्द्र भए गेल । प्रथम भातगाँवमे द्वितीय कान्तिपुर (काठमाण्डू)मे । भातगाँवमे विश्वमल्ल, त्रिभुवनमल्ल, जगज्ज्योतिर्मल्ल तथा भूपतीन्द्रमल्ल ई चारि लेखक बड़ प्रसिद्ध भेलाह । विश्वमल्लक ‘विद्याविलाप’ प्रथम मैथिली नाटक थिक । यद्यपि एकर स्वरूपते प्रति एखन पर्यन्त उपलब्ध अछि । विश्वमल्लक पश्चात् त्रिभुवन वा त्रैलोक्यमल्लक समयमे अनेक नाटक लिखल गेल ।

त्रिभुवनमल्लक पश्चात् जगज्ज्योतिर्मल्लक समयमे अनेक नाटकक रचना भेल । ई संस्कृतक उद्भट विद्वान छलाह, परञ्च मैथिलीक सेहो उपेक्षा नहि कएल । हिनक ‘मुदित कुवलयाम्ब’ १६२८ ई० मे लिखल गेल । एहिमे मल्लवंश सम्बन्धी अनेक विषय भेटैछ । एकर पश्चात् इ ‘हरगौरी विवाह’ नामक नाटक लिखल । हिनकहि तेसर नाटक ‘कुञ्जविहारी’ थिक जाहिमे कृष्ण, राधा एवं गोपी लोकनिक सरस वर्णन उपस्थित कएल गेल अछि ।

जगज्ज्योतिर्मल्लक पौत्र जगतकाशमल्ल मैथिलीकेँ अत्युच्च शिखरपर बैसाओल । भूपतीन्द्रमल्ल जे सन् १६६५ सँ १७२२ पर्यन्त विद्यमान छलाह प्रायः

आठ नाटक क रचना कएल, जाहिमे 'माधवानल', 'पशुपति प्रादुर्भाव', 'गौरी-
बिवाह' तथा 'गोपीचन्द्र' उल्लेखनीय अछि । एहि नाटकसभमे मैथिलीक
अतिरिक्त 'नेवारी' भाषाक सेहो प्रयोग भेटैछ । एकर अतिरिक्त कृष्णदेव
रचित तेइस अङ्कमे समाप्त 'महाभारत' नाटक भेटैछ ।

काठमाण्डू तथा पाटनमे सेहो अनेक नाटकक रचना भेल । नेपालक मैथिली
नाटकसभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट भए जाइछ जे, ओतए नाटकक एक नवीन
शैलीक विकास भेल जे संस्कृतक नाटक सभमे अभाव पाओल जाइछ ।
नाटकमे नान्दी तथा सूत्रधारक पश्चात् कथा-वस्तु कहि देल जाइछ । आश्रय-
दाता तथा देश एवं राज्यक वर्णन रहैत अछि । तथा पात्र अपन परिचय-
गीत सभमे दैत छथि । नाटकमध्य गीतक संख्या विशेष रहैछ । विषय-वस्तु
सर्वसाधारण योग्य होइछ । रंगोन पर्दाक व्यवहार प्रायः नहि होइत छल ।
अभिनय प्रायः दिनहिमे भेल करैत छल तथा नाटकमे आदिसँ अन्त पर्यन्त
बाध्यकक व्यवस्था रहैत छल ।

आसाममे

आसामक नाटक 'अङ्कोयानाट'सँ विख्यात भेल । एकर मुख्यतया तीन
भेद मानल गेल अछि-चरित, विजय तथा बध । कथोपकथन मैथिलीमे तथा
गीत सभमे असमी एवं मैथिलीक मिश्रण अछि । कथावस्तु विशेषतः
रामायण, महाभारत तथा पुराण सभसँ लेल गेल अछि । एहि नाटकक मुख्य
उद्देश्य धार्मिक रहल अछि । नाटककार लोकार्णमे तीन गोटए विशेष उल्लेख-
नीय छथि—शंकर देव, माधवदेव एवं गोपाल देव । शंकरदेव (१४४९-१५८५)
क लिखल छओ नाटकमे 'कालोय दमन', 'राम-विजय' 'पारिजात-हरण'
आदि विशेष उल्लेखनीय अछि । माधव देव १४८६-१५६६ जनिक 'अर्जुन
द्वैमंगल' तथा 'भोजन व्यवहार'-कृष्ण चरित्रकेँ लएकँ प्रसिद्ध अछि । हिनक
शैली क उदाहरण त देखू ।

“तदन्तरे यशोदा श्री कृष्णक उरुखले बान्धि थैयकहु गृहकर्ममे व्यग्र रहल ।
ताहे देखिये श्री कृष्णा मने गुणये लगाय ।”

हिनक हास्य प्रिय नाटकमे 'चोर-धरा' उल्लेखनीय अछि ।

गोपाल देव क 'जन्म यात्रा' असमियाँ नाटकमध्य विशेष ख्याति प्राप्ति कएलक
अछि । देशक - पैघ पैघ चित्रकार एवं संगीतज्ञ रहलासँ हिनका लोकनिक
नाटकमे रागक विशेषता रहैत छलैन्हि ।

श्रीअनन्तबिहारीलालदास 'इन्द'

रेडियो नाटक

नाटक भारतीय वाङ्मयक एक गोठ प्रमुख अंग थिक । नाटक दृश्य होइछ । ओकर कथानक, कथोपकथन, पात्र, रंगमंच आदि केहन हो, ई वस्तु हमरा लोकनिके प्राचीन कालसँ ज्ञात अछि । नाटकक हेतु कोन - कोन विषय पर ध्यान राखक चाही, कोन - कोन वस्तु रंगमंचपर नहि देखावक चाही, एकर निर्णय नाट्य-शास्त्रक आदि आचार्य भरत मुनि कै चुकल छथि । हुनक निर्धारित नियमानुकूल अनेकानेक नाटकक निर्माण एहि देशमे होइत आयल अछि । अनेक भारतीय भाषाक भंडार नाटकसँ परिपूर्ण होइत आयल अछि । आशा तऽ इहो अछिए जे भारती वाङ्मयक भंडार नाट्यक गुंथसँ समृद्धि-शाली होइते रहत ।

किन्तु आजुक वैज्ञानिक युगमे रंग - मंचक क्षेत्रमे सेहो अभूतपूर्व क्रान्ति भेल अछि । वैज्ञानिक अनुसंधान, आविष्कार आओर ओकर प्रचार-प्रसारसँ रंग-मंचक भविष्य अपन नवीनतम मार्गपर अग्रसर भै रहल अछि । जतै धरि दृश्य-नाटकक प्रश्न अछि सिनेमाक आविष्कार आओर प्रचारसँ ओकर स्थिति बहुत किछु बदलि गेलैक । देशमे किछुएक रंगशालामे एतवा चलचित्रक निर्माण भै रहल अछि जे प्राचीन ढंगसँ प्रस्तुत भेनिहार नाटकक लोक-प्रियता बहुत किछु नष्ट भै गेलैक वा भै रहल छैक ! कला - कौशलक रक्षार्थ किछुएक संख्या नव - नव साधनसँ सम्पन्न भै रंग-मंचपर अपन प्राचीन गौरवक रक्षाक प्रयत्न कै रहल अछि । वैज्ञानिक युगक वरदान स्वरूप नाटक अब दृश्य मात्र नहि रहि गेल । रेडियोक आविष्कार सँ तऽ नाटक श्रव्य सेहो बनि गेल । रेडियोसँ प्रसारित भेनिहार नाटक पूर्णतः श्रव्य थिक । हम अपन गामक पुस्तकालय, वाचनालय वा अपन व्यक्तिगत शयन-कक्षमे बैसि कै संसारक कोनो भागसँ प्रसारित होइत कार्यक्रम तत्काले सुनि सकैत छी । रेडियो कार्यक्रममे नाटकक सेहो महत्वपूर्ण स्थान होइत छैक । जहियासँ पटनामे रेडियो स्टेशनक स्थाना भेल तहियासँ ओकर कार्यक्रममे मैथिलीकेँ सेहो किछु स्थान भेटलैक । पटना रेडियोसँ मैथिली कार्यक्रममे नाट्यक प्रतिमास

प्रसारित होइत आयल अछि । रंगमंचक लेल नाटकक निर्माणमे कतेक गोटे प्रयत्नशील रहैत अछि तकर निश्चित सूचना त हमरा नहि अछि किन्तु रेडियोक लेल नाटकक निर्माण तऽ होइते आयल अछि । प्रस्तुत निबन्धमे रेडियो द्वारा प्रसारित मैथिली नाटकक समीक्षा करब हमर लक्ष्य नहि अपितु हम चाहैत छी जे रेडियो नाटकक स्वरूपपर किछु मात्र प्रकाश दी ।

शब्दहुँ सँ ई स्पष्ट अछि जे दृश्य आर श्रव्य नाटकक भेद कने दूनूक स्वरूपमे भिन्नता हैबे करतै । एतए हम दूनू नाटकक किछु विभिन्नतापर विचार कै रहल छी । रंग-मंचक नाटक जतै दृश्यक संग श्रव्य सेहो होइछ तथा रेडियो नाटक (टेलीविजन नहि) श्रव्यमात्र होइछ । रंग - मंचक नाटकमे विभिन्न परिस्थितिक सूचनार्थ विभिन्न दृश्य देखाओल जाइछ मुदा रेडियो - नाटकमे ई श्रव्य साधन द्वारा प्रस्तुत करक पड़ैत छैक । रंग-मंचपर पात्रक विभिन्न मुद्रा देखि कै हम ओकर हर्ष - विषाद उत्तेजना आदिक भावना कै सकैत छी मुदा रेडियोसँ से नहि भै सकैछ से तँ रेडियो-नाटकमे एकरा हेतु कथोपकथन वा अन्य ध्वनि - संयोजना द्वारा सभ किछु प्रकट करक चाही । यथा ककरो अयबाक प्रसंग हो त हम ध्वनि संयोजन वा कथोपकथन मात्र अवलम्ब लऽ सकैत छी । किन्तु इहो कार्य सरल नहि छैक । ध्वनि संयोजना एहन रहबाक चाही जाहिसँ श्रोताक ध्यान सर्वथा भंग नहि । ककरो जेबाक होइ तऽ तकरो स्पष्ट संकेत संलाप वा ध्वनि योजनासँ देबाक चाही । रंग - मंच पर तऽ साधारण प्रकार जाइत वा अबैत देखाओल जाइत छैक किन्तु रेडियोसँ नाटक मे जँ कोनो पात्र अपन जेबाक स्पष्ट आभास बिनु देवे चलि जाय तऽ श्रोता नहि जानि सकत जे पात्र गेल वा अछिए । एहि तरहे पात्रक वा स्थानक आवश्यक विवरण सेहो श्रव्य - साधन द्वारा प्रस्तुत करऽ पड़ैत छैक ।

रेडियो नाटक व्यक्तिक अभिरुचिक अनुकूल हैबाक चाही कारण ओकर श्रोता रंगमंचक दशक जकाँ समूहमे नहि बैसैत छथि । जँ नाटक श्रोताकेँ रुचिकर नहि बूझि पड़लै, तखन आ पट दऽ रेडियो बंद कै सकैछ वा दोसर स्थानसँ प्रसारित कार्यक्रम सुनऽ लागत । किन्तु एकर ई अर्थ कदापि बहि जे रेडियो नाटक व्यक्तिवादी नाटक हो । हमर तात्पर्य ई अछि जे नाटकक कथा-बस्तु हमरा लोकनिक जीवनक सामान्य घटना हो जे एहि रूपसँ प्रस्तुत कैल जाय जे सभ श्रोता केँ प्रिय लगैक । सभक मर्मकेँ स्पर्श करै तथा सभ श्रोता ई अनुभव करै जे ई कथानक हमरा हृदयक कोनो कोनमे सुप्तबस्थामे छल । रंगमंचक नाटकक अपन एक गोठ निश्चित सीमा छैक । किन्तु रेडियो नाटकक हेतु ओ सीमा पूर्णतः उपयुक्त नहि कहल जा सकैछ । रंगमंचपर हम वर्षा, बिजली, ठनका, बायुयान, रेलगाड़ी आदिक दृश्य उपस्थित नहि कै सकैत छी ।

मुदा रेडियो-नाटकमे ई सभवस्तुक समावेश हम ध्वनि - संयोजनसँ प्रस्तुत कै सकैत छी ।

रंगमंचक लेन ई आवश्यक छैक जे दू दृश्य मे पात्रकेँ जँ दू वेशमे अयवाक छैक तऽ किछु समय ओकरा भेटैक जे ओ अपन परिधान बदलि सकै मुदा रेडियो-नाटकमे ई आवश्यक नहि । रेडियो नाटकक अभिनेता अपन साधारण वेश भूषामे अनेक दृश्यमे आवि कऽ कार्य कै सकैत अछि । यदि आवश्यक होतैक त दू-एक कथोपकथन द्वारा ओकर वेश - भूषा तथा स्थान परिवर्तनक सूचना श्रोताकेँ देल जा सकैत छैक ।

रंगमंचक अभिनेताकेँ तत्काले अपन दर्शकक प्रतिक्रिया ज्ञात होइत छैक । जँ उत्तम कलाक प्रदर्शन कैलक त दर्शकक मुख - मुद्रा देखिकेँ ओकरा ओकर उत्साह आर बढ़ैत छैक मुदा रेडियोक अभिनेताकेँ दर्शकक प्रतिक्रियाक ज्ञान तत्काल संभव नहि तँ ओकरा नाटक कथोपकथन मात्रसँ प्रेरणा लेबक पड़ैत छैक तँ कथोपकथन गतिवान् तथा संप्राण रहब आवश्यक छैक ।

रेडियो नाटकमे भाषा कथोपकथन तथा ध्वनि - संयोजनापर विशेष ध्यान देबक चाही । रेडियो-नाटकक हेतु ध्वनि-संयोजनक पूर्ण ज्ञान हैब आवश्यक तथा साधारण ज्ञान रहब आवश्यक छैक । यथा स्थान जँ लेखक स्पष्ट संकेत दै सकथि तऽ उत्तम ! नाटक भाषा तथा कथोपकथनमे सरलता रहब बड़ आवश्यक छैक । कथोपकथन अधिक पैघ-पैघ नहि हेबाक चाही ने तऽ अभिनेताकेँ कहवामे असुविधा तथा श्रोताकेँ सुनवामे एकरसताक अनुभव होइत छैक । पृष्ठभूमिमे संगीत वा विभिन्न परिस्थितिक अनुकूल अधिक ध्वनि-योजना केला संता नाटकसँ सुननाहरकँ बाधा सहो उपस्थित होइत छैक । तेँ यथा-साध्य कम ध्वनि-योजनाक समावेश करब उचित जाहिसँ नाटक कथा-वस्तु श्रोता स्पष्ट रूपसँ वृम्भि सकै । रेडियोक सम्वाद वा कथोपकथन श्रोता एकवेर मात्र सुनैत अछि तँ स्पष्टताक पूर्ण ध्यान राखब लेखकक सफलता द्योतक होइत छैक ।

रेडियो नाटकपर पाश्चात देशमे अनेक ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि किन्तु हिन्दीमे बहुत कम तथा मैथिलीमे तऽ एखन अभाव अछि । हिन्दीमे सिद्धनाथ कुमार लिखित “रेडियो नाट्य शिल्प बड़ उपयोगी पुस्तक ज्ञानपीठ” काशीमे प्रकाशित भेल अछि । रेडियो-नाटकक प्रेमी वा लेखक एहिमे विशेष लाभ उठा सकैत छथि । अबसर भेटने रेडियो नाटक पर हम विशेष प्रकाश देबाक प्रयत्न करब । †

श्रीश्यामचन्द्रका

—समय के बिना तो नहि भेलै—लगने पाँचम या सातप वरखे अवैत-
अवैत ओकरा समाजक अवल नियमक मध्य आएव जाय पड़लै—एकर पता
ओकरा तखन लगलै जखन ओ सोलह-सत्रह वरखक भेलै—किन्तु तखन
बुझने की ? आब तऽ ओकर जावन तीन आखर 'नियम'क मध्य छै...

एक दिन सांझ देखेबाक बेर छोटोदीक टाट लगसँ ओ फुलियाकेँ अवैत देखलकै
सौसे देह तिहरि उठलै—ओकरा आगू बारह वरखक बोलल दृश्य नाचऽ
लगलै—ओहि दिन ओ आठे-नौ वरखक छलै—फुलियाक सगाइ छलै.....
ओहिमे ओ व्यस्त छलै...मुनियां बजाव आयल छलै...आंगनमे माय-दीदी
ओं बड़ा-ओं बड़ा कनैत छलै...एकरा देखि आ सब आरो ठोहि पारि कानव
उठाने छलै...ओकरा कमला कात लऽ गेलै...ओहिमे ओकर नवका लइठो
फोड़ि देलकै...आ कमलाक घोंकल पाइनस ओकर ललका चाइन धो देलकै...

निर्बोध किछु नहि बजलै—आ नियमक विरुद्ध बजवे की करतै ?

तबहिने फुलिया लग आवि बाजि उठलै—गोड़ लगै छी दाइ...ओ विस्मित भै
उठलै आ बजलै—के, फुलिया ! कह-कह सुखो रहै छैह कि ने ?

हँ दाइ, खूब सुखो छी—दुनू बेकती कमाइ छी—खाइ छी—खूब सुखो आ
खुशोसँ रहैत छी ।

—ई के थिकी ?

—हमरे ननकिरवा—ई कहि, विहुँसि, ओ आगू बढ़ि गेल—आ ओहि टाट लग
ठाढ़ भेल एक पैव स्वांस छोड़ने छलै—जाहिमे छलै जोवनक छाटसन कथा ।
एतवेमे ओकर मन बाइज उठलै—मनुखकऽ लेल कतौ दू नियम होइक ?
किन्तु लगले पुरखाक नियमक दाहि ओकरा हृदयमे उठय लगलै—ओहिमे
कखनो अपनापर संदेहो, आ कखनो अपना पर भरोसा बुझता जाइक !
एकर पता तखन लागल जखन ओ नियमक अन्न-शस्त्रसँ घायल समाजक
गामसँ दूर भेटल—हुक-हुक करैत एहि जानकोकेँ के जिएतै ? जिएबाक को
नियम छै, कहवै ?

मैथिलीक आलोचना-निबन्ध-इतिहास-साहित्य

१. विवेचना	१)	२०. सम्मेलन-साहित्य-समीक्षा	२)
२. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता		२१. परिचय-पात	१॥)
(दूनु भाग)	२)	२२. गद्य-चन्द्रिका	१॥)
३. परिचय-निचय	१)	२३. मैथिली नवीन साहित्य	२)
४. विचारमाला	१॥)	२४. मैथिली साहित्य सुमन	१॥३)
५. मैथिली कुसुमाञ्जलि	१॥)	२५. संस्कृति	२)
६. विद्यापति ठाकुर	१॥३)	२६. कविवर पं० चन्दा झा	१)
७. महाकवि विद्यापति	१)	२७. रामायण शिक्षा	१)
८. प्रेम	॥)	२८. व्यवहार विज्ञान	५)
९. मैथिली गद्यकुसुमाञ्जलि	१॥)	२९. भारतवर्ष	॥३)
१०. गद्य-कुसुम-माला	॥)	३०. चन्द्रकुलप्रशस्ति	१)
११. मैथिली गद्य पुष्पाञ्जलि	१)	३१. मिथिलातत्वविमर्श	३॥)
१२. अनुभूति	॥)	३२. मिथिलाभाषामय इतिहास	५)
१३. कुकुरचालि	॥)	३३. मिथिला रिपब्लिक	२॥)
१४. संख्यखद्योतिका	॥)	३४. मैथिली साहित्यक इतिहास	५)
१५. स्त्री-धर्मशिक्षा	१)	३५. मैथिली साहित्यक इतिहास	२५॥)
१६. वेदान्त-दीपक	॥)	(अंग्रेजी—दूनु भाग)	
१७. मैथिली गद्यसंग्रह (तृ० भाग)	॥)	३६. मैथिली साहित्यक प्रगति	॥)
१८. वर्णरत्नाकर	५)	३७. मिथिलाक इतिहास	१॥)
१९. रचना-संग्रह	५)	३८. मिथिलामे शिक्षा	१)

मैथिलीक उच्चकोटिक प्रकाशन

१. मैथिली साहित्यक इतिहास	५)	१०. कृष्णजन्म	१॥)
२. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता		११. एकावली परिणय	४)
(दूनु भाग)	२)	१२. चित्रा	२)
३. विवेचना	१)	१३. आत्ममर्यादा	॥)
४. अम्ब-चरित	२)	१४. गीति-माला	॥)
५. मिथिलाभाषा प्रकाश	२)	१५. रागतरंगिणी	६)
६. विद्यापति (खगेन्द्रनाथ		१६. रावणवध-महाकाव्य	१॥)
मजुमदार)	१५)	१७. रचना-संग्रह (प्रथम भाग)	५)
७. मैथिली-गीति-रत्नावली	१॥)	८. परिचय-पात	१॥)
८. मिथिला रामायण	५)	१९. सम्मेलन-साहित्य-समीक्षा	२)
९. मैथिला रामायण	२॥)	२०. मैथिली कुसुमाञ्जलि	१॥)

बिना अग्रिम एडवान्सकेँ बी० पी० पो० नहि जाइछ ।

प्राप्तिस्थान : मन्त्री, वैदेही समिति, लालबाग, दरभंगा ।